. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि.४३९

भारतीय संस्कृति और शुद्धि

अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ?)

लेखक
श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीहरिः ॥

भारतीय संस्कृति और शुद्धि

(क्या अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ?)

यत्कीर्तनं यत्स्मरणं यदीक्षणम् ।
यद्वन्दनं यच्छ्रवणं यदर्हणम् ॥
लोकस्य सद्यो विधुनोति कल्मषम् ।
तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः ॥

★

१२२६

लेखक
श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

नेपाल साहित्य केन्द्र
मूल्य ने० रु० ११.५०

प्रकाशक
संकीर्तन-भवन, प्रतिष्ठानपुर
(झूसी) प्रयाग

संशोधित मूल्य १ रुपया

पञ्चम संस्करण २००० } वैशाख सं० २०३४ अप्रैल १९७७ { मूल्य ५० पैसा

मुद्रक—बंशीधर शर्मा, भागवत प्रेस, ८५२ मुट्ठीगंज, प्रयाग ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भूमिका

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

एक कहावत है 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।' पहले हम खेत में पानी एकत्रित करने के लिये उसकी मेंड़ बाँधते हैं जब देखते हैं पानी अत्यधिक हो गया है, तो फिर उसे निकालने के लिये मार्ग बना देते हैं। ऐसा न करें तो वह खेती को नष्ट कर दे। शरीर में मांस आदि कोई धातु बढ़ जाती है, पहले उसे शमन करते हैं। आवश्यकता होने पर निकाल देते हैं। भगवान् जो भी करते हैं, मङ्गल के ही लिये करते हैं, शिक्षा के लिये ही करते हैं। आज हिन्दु और हिन्दुत्व के विनाश की चारों ओर से चेष्टायें हो रही हैं। एक ओर तो वह समाज है, जो हम में से ही निकलकर अपने को विदेशी या विधर्मी मान बैठा है। उसका दृढ़ संकल्प है हम भारत में एक भी हिन्दु को न रहने देंगे। जब तक यहाँ के ४० करोड़ निवासी मुसलमान न हो जायँगे, तब तक हम विश्राम न करेंगे। दूसरी ओर हममें से ही कुछ उदारता और न्याय का स्वांग रचने वाले उनकी पीठ ठोक रहे हैं। उन लोगों ने केवल हत्या, व्यभिचार, लूटमार, अनाचार बदाचार, गुण्डेबाजी के बल पर एक चौथाई भाग भारत पर अपना अधिकार जमा लिया है शेषांश को हड़पने के लिये दिन प्रतिदिन कुचक्र रच रहे हैं। आये दिन समाचार पत्रों में यह

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पढ़ने को मिलता है, अमुक स्थान पर इतने अस्त्र शस्त्र पकड़े गये, अमुक स्थान पर इतनी सुरंगें मिलीं। ये सब हिन्दुत्व को मिटाने की चेष्टायें हैं। आज जो विदेशी, विधर्मी और अपने को अभारतीय संस्कृति वाला कहकर भारतीयों हिन्दुओं के साथ रहना नहीं चाहते हैं, वे हममें से ही हैं। अपने समाज को विशुद्ध बनाये रखने को हम इन्हें अपने से दूर-दूर करके हटाते गये। ये बढ़ते गये हम सामाजिकता धार्मिकता और जनसंख्या में घटते गये। जो व्यक्ति व्यय तो करता रहता है, किन्तु आय का उसके यहाँ कोई प्रबंध नहीं उसे एक दिन निर्धन होना ही पड़ेगा। आज हमारे पेटों में छूरे इसलिये भोंके जा रहे हैं कि हम हिन्दु हैं, आज हमारा सर्वस्व इसलिये छीना जा रहा है कि हमने विदेशी विधर्मी के संस्कृति के सम्मुख सिर नहीं झुकाया, आज हम पग-पग पर इसलिये अपमानित किये जा रहे हैं कि हम अपने को भारतीय कहते हैं। आज हमारी बहिन, बेटियों और माताओं के साथ जघन्य पाप महान् अत्याचार इसलिये किये जा रहे हैं कि वे हिन्दुओं की बहिन बेटी हैं। अब हिन्दुओं की आँखें खुली हैं, अब वे अनुभव करने लगे हैं कि हमें अपने बिछुड़े हुए बन्धुओं को पुनः अपनाना चाहिये। ऐसा कौन हिन्दु होगा जो यह न चाहेगा कि हमारे समाज से तो बलात स्त्रियाँ भगा ली जायँ, बलपूर्वक डरा धमका कर उन्हें विधर्मी बना लिया जाय, किन्तु हम फिर उन्हें किसी प्रकार अपने में न मिलावें। ऐसा पहिले रहा होगा, उस समय के लिये यही हितकर होगा। आज तो देश काल की स्थिति हमें यह बताती है कि जो बलपूर्वक विधर्मी बना लिये गये हों, उन्हें तो अपने में ले ही लिया जाय, जो और भी हों आज विधर्मी बनाए गये हों या हजार वर्ष पहिले उन सबको भी हिन्दु बना लिया जाय। इसके बिना त्राण नहीं, दूसरा मार्ग नहीं। आज यह आवश्यकता सभी हिन्दुहितैषी अनु-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भव कर रहे हैं। जो अपने में मिल रहे हैं उनका सहर्ष स्वागत कर रहे हैं। करना ही चाहिये समय इसके लिये हमें विवश करता है। हमें आपत्ति के समय आपद्धर्म का ही आचरण करना चाहिये आपत्ति में विशुद्ध धर्म का पालन होता ही नहीं, जो करने का मिथ्याग्रह करता है वह दम्भ करता है, ढोंग करता है। समाज को एवं अपने आपको धोखा देता है।

आज से लगभग २४-२५ वर्ष पहले जब मैं काशी में रहता था। मैंने एक पुस्तक लिखी थी "द्विजातियों को हल चलाना पाप नही।" यद्यपि ब्राह्मणों को हल चलाने का विधान नहीं क्योंकि कृषिकर्म वैश्यों का धर्म है, किन्तु जों ब्राह्मण सैकड़ों पीढ़ियों से कृषि करते आये हैं और सभी खेती के काम करते हैं केवल हल की मूँठ न छूना ही परमधर्म समझते हैं, तो यह मिथ्याचार है दम्भ है। पश्चिम में सभी ब्राह्मण हल जोतते हैं। कुछ लोगों ने मेरे प्रस्ताव का समर्थन किया कुछ लोगों ने बुरा भला कहा गालियाँ दी। जो मुझे गाली देते थे आज वे ही समय के अनुसार उसका समर्थन कर रहे हैं, हल चलवा रहे हैं क्योंकि हलवाहे मजदूरों का अत्यन्त आभव है। चारों ओर जल से घिरे हों और उन्हें कोई उपदेश दे 'बाहुभ्यां नदी न तरेत्' शास्त्र की आज्ञा है बाहुओं से नदी न पार करनी चाहिये उसे कौन मानेगा ? यह धर्म अनापद का है। आपद् धर्म दूसरा है। शास्त्रों में आपद् धर्म का विशेष वर्णन है। शास्त्रों को न देखने से आज रूढ़ियों को ही धर्म मानकर अर्थ का अनर्थ हो रहा है। हिन्दु समाज की जैसे आज दुर्दशा है वैसी कभी भी न रही होगी। आज हम अत्यन्त ही विपत्ति के समय में संसार पथ की यात्रा कर रहे हैं। हिन्दू समाज के भविष्य का स्मरण करके सभी के रोमांच हो रहे हैं। इसी प्रकार भारत के टुकड़े होते रहे, इसी प्रकार एक-एक करके सभी प्रान्त हमारे हाथों से निकलते गये

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तब तो हम कहीं के भी न रहेंगे। हमारे मन्दिर, तीर्थ, व्रत, उपासना, संस्कृति सभी का नाश हो जायगा। विधर्मी इस बात का सतत प्रयत्न कर रहे हैं कि भारत से भारतीय सभ्यता भाग जाय। होगा तो वही जो प्रभु को स्वीकार होगा। मनुष्य के करने से न किसी का नाश होता है न रक्षा। फिर भी मनुष्य शक्ति भर चेष्टा करता है, उसका स्वभाव है बिना कुछ किये उस पर रहा नहीं जाता।

आज लोग इस बात के लिये लालायित हैं कि विधर्मियो को हिन्दू बनाना शास्त्रसम्मत है या नहीं, कुछ बन्धुओं का अनुरोध था कि मैं इस विषय पर एक छोटी-सी पुस्तिका लिखूँ जिसमें जितने मिल सकें शास्त्रीय प्रमाण देकर यह बताया जाय कि विधर्मियों की शुद्धि शास्त्रसम्मत है। जब लोग मनमानी कर रहे हैं और इस विषय में शास्त्रीय व्यवस्था विद्यमान है तो फिर यह कार्य शास्त्रीय ढङ्ग से सुव्यवस्थित रूप में क्यों न किया जाय। इसी उद्देश्य से मैंने जहाँ तक हो सका अत्यन्त शीघ्रता में इस पुस्तिका को लिखा है। भागवती कथा के लेखन कार्य में मुझे इतना व्यस्त रहना पड़ता है कि समय का अत्यन्त ही अभाव है फिर अन्य भी बहुत से कार्य लगे रहते हैं अतः ३ ४ दिन में ही मैंने थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर इस पुस्तिका को लिखा है। मैंने बहुत ही संक्षेप में इसे लिखा है यह विस्तार किया जाता तो बहुत बड़ा पोथा बन जाता। उनकी आवश्यकता भी नहीं। प्रमाण की पुस्तकें जुटाने में मुझे पं० रामकृष्णजी शास्त्री ने सहयोग दिया वे तो अपने घर के ही हैं आभारवाली वो कोई बात ही नहीं है। अंत में मेरी अर्धकुम्भ के अवसर पर आए हुए संत महात्मा, विद्वान् आचार्य समाज के अग्रणी महानुभावों के चरणों में प्रार्थना है कि वे इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करें और देश काल की परिस्थिति को देखते हुए इस विषय में ऐसी व्यवस्था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दें जो उपादेय हो। समय ही सब कुछ करा लेता है समय-समय की रागिनी अच्छी लगती है। आशा है विद्वान् महानुभाव इस समय की उपेक्षा न करेंगे इससे लाभ उठाकर अपनी तथा हिन्दु समाज की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने की चेष्टा करेंगे।

संकीर्तन-भवन, झूसी
(प्रतिष्ठानपुर) प्रयाग
मार्गशीर्ष-शु० १३, २००४

समाज का अकिञ्चन सेवक
प्रभुदत्त

—:—

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीहरिः ॥

भारतीय संस्कृति और शुद्धि

(१)

किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कसा
आभीरकङ्का यवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः
शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः ॥*
(श्री० भा० २ स्क० ४ अ० १८ श्लो०)

छप्पय

प्रभुपद निसृत नीर गंग पी नर अघ खोवें।
भक्तनि पदरज धारि शुद्ध यवनादिक होवें॥
लैकें जिनिको नाम कटहिँ जग पातक भारी।
रूपधारि जिन हृदय होहिँ पावन नर नारी॥
राम कृष्ण गोविन्द हरि, जगपाव जिन नाम हैं।
तिन प्रभुके पद पदुममहँ, श्रद्धा सहित प्रनाम हैं॥

भारत की संस्कृति और सभ्यता का नाम भारतीय संस्कृति है। अब प्रश्न यह है कि 'भारत क्या? संस्कृति क्या? वेद

* श्रीशुकदेवजी भगवान् की स्तुति करते हुए कह रहे हैं—"राजन्! जिन भगवान् के भक्तों की ही शरण ग्रहण करने से किरात, हूण,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पुराणों के अनुसार जहाँ तक खारे जल का समुद्र हो, तहाँ तक भारत की सीमा है। पुराणों में भूमण्डल का वर्णन ऐसा है कि सात द्वीप हैं, इनमें सबसे मध्य में जम्बूद्वीप है जम्बूद्वीप के ९ खण्ड हैं। वे ९ बराबर नहीं हैं। जैसे पाटल (गुलाब) या कमल के फूल एक तो बीच का भाग होता है और उसके आस-पास चारों ओर पंखुड़ियाँ रहती हैं, इस प्रकार जम्बूद्वीप के बीच में तो इलावृत है और उसके चारों ओर भद्राश्ववर्ष, हरिवर्ष, केतुमालवर्ष, रम्यकवर्ष, हिरण्यमयवर्ष, उत्तरकुरुवर्ष, किंपुरुषवर्ष, और अजनाभवर्ष अथवा भारतवर्ष। इन ९ खण्डों वाले द्वीप का नाम जम्बूद्वीप है। इस द्वीप के चारों ओर जैसे किले के चारों ओर खाई रहती है वैसे खारा समुद्र है। फिर उस खारे समुद्र के चारों ओर प्लक्ष नाम का द्वीप है। उसमें भी सात वर्ष हैं, नदी पर्वत सब हैं, उसके चारों ओर ईख के रस का समुद्र है, फिर शाल्मलि द्वीप है। इसी प्रकार एक द्वीप के अनन्तर एक समुद्र है। इसीलिए ७ समुद्र और ७ द्वीपों की कल्पना है। पुराणों में ऐसा बताया है कि भारतवर्ष को छोड़कर अन्य आठ वर्षों में और ६ द्वीपों में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग आदि की कल्पना नहीं। वहाँ पुरुष बूढ़े नहीं होते। उनके शरीर से पसीना नहीं निकलता। वे भोजन आदि के लिये कृषि आदि नहीं करते। वृक्ष, नद, नदी उन्हें आवश्यक वस्तुएँ देते हैं। वे लोग सहस्रों वर्ष तक जीते हैं। उन्हें इन द्वीप और वर्षों को साधारण दृष्टि वाले इन चर्म चक्षुओं से नहीं देख

आन्ध्र, पुलिन्द, पुल्कस, आभीर, कङ्क, यवन (मुसलमान) और खस आदि निम्न जातियों के पुरुष तथा और भी पापी पुरुष जिन भगवान् के भक्तों का आश्रय लेने से शुद्ध हो जाते हैं, उन पुण्य कीर्ति प्रभु के पादपद्मों में पुनः-पुनः प्रणाम है।'

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सकते। अभिप्राय इतना ही है कि ये द्वीप खण्ड भूमि के स्वर्ग हैं। ये आँखों के देखने के नहीं हैं ध्यान द्वारा अनुभव करने के हैं। ये सब कर्मभूमि न होकर भोगभूमि हैं। कर्मभूमि तो भारतवर्ष ही है। पहिले भारतवर्ष के तीन ओर तो समुद्र था एक ओर इलावृतखण्ड था, इधर-उधर दो खण्डों से और मिला था। सगर के दश सहस्र पुत्रों ने अपने पिता के अश्वमेधीय घोड़ा को खोजने के लिये पृथ्वी को चारों ओर से खोद डाला। अर्थात् इसके चारों ओर पाताल तक एक खाई सी बना दी। बहुत से देश खोद डाले इससे भारतवर्ष अन्य आठों वर्षों से सर्वथा पृथक् हो गया। उस खोदी हुई खाई में समुद्र का खारा पानी भर गया। सगर के पुत्रों के खोदने से वह 'सागर' के नाम से विख्यात हो गया। इस खोदने से भारतवर्ष के आठ और उपद्वीप बन गये जिनके नाम पुराणों में स्वर्णप्रस्थ द्वीप, चन्द्र-शुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दर, हरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का प्रसिद्ध है। योरोप, अमेरिका, अफरीका का इनमें से किसका नाम कौन-सा है इसका प्राचीन इतिहास मर्मज्ञ निर्णय करें। मेरे कहने का अभिप्राय इतना ही है कि बहुत पहिले जहाँ तक खारे जल का समुद्र था, जिन पर आँखों से दीखने वाले कर्म कराने वाले मनुष्य रहते थे उन सब देशों की गणना भारत में थी आज जिसे पश्चिमी भौगोलिक विद्वान् संसार का भूगोल बताते हैं, पुराणों के अनुसार वह केवल मात्र भारतवर्ष का भूगोल था।

भारत से ही भिन्न-भिन्न जातियों की उत्पत्ति

भारतवर्ष से सर्वथा पृथक् होने के कारण इन द्वीपों वाले यथेच्छाचारी हो गये। ये ऋषियों और वेदशास्त्र के शासन से रहित हो गये। इनमें वर्णाश्रम और सदाचार का अभाव हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

गया। अतः भारतवर्ष के लोग इन्हें अवर्णाश्रमी या अनार्य कहने लगे। बीच में सागर पड़ गया। सम्बन्ध विच्छेद हो गया। हम लोगों में से जो सदाचार का उल्लंघन करता या जिसे हम वर्णाश्रमी अपने से पृथक् कर देते, वह उन्हीं में जाकर मिल जाता क्योंकि प्राणी सामाजिक जन्तु है, वह बिना किसी समाज के रह नहीं सकता। जिससे वैदिक वर्णाश्रम धर्म का पालन न हुआ वे ही उन-उन देशों में जाकर वैदिक संकारों से रहित होकर पौण्ड्र, द्रविड़, कम्बोज (काबुली) यवन, (यूनानी) शक, तिब्बती तातरी, पारद, पाल्हव, फारसी, चीनी, किरात दरद, खश नाम से प्रसिद्ध हो गईं।*

इसलिये ये अभारतीय जातियाँ हो गईं वास्तव में तो इन सब जातियों की उत्पत्ति ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शूद्र इन्हीं से हुई है। अभारतीय संस्कृति से पृथक् होने से उपनयनादि संस्कारों से हीन हो जाने के कारण ये अभारतीय या अनार्य जातियाँ कहलाने लगीं।

मनुष्य जब अधिकारारूढ़ हो जाता है, तब उसे अभिमान हो जाता है। उस समय अनेकं प्रतिकूल आचरण सह नहीं सकता। एक समय था जब भारतवर्ष के क्षत्रिय संसार में सर्वश्रेष्ठ वीर समझे जाते थे। यहाँ तक वर्णन है, उनके रथ के

---

* पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः। पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदा खशाः। शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः। वृषत्वं गता लोके ब्रह्मणादर्शनेन च।

(मनु० स्मृ० १० अ० ४३, ४४)

* यवनाः किराता गान्धाराश्चीनाः शबरबर्बराः, शकास्तुषराः कङ्काश्च पल्हवाश्चांध्र मद्रका। पौड्राः पुलिन्दारमठा काम्बोजाश्चैव सवंशः, ब्रह्मक्षत्र प्रसूताश्च वैश्याः शूद्राश्चमानवाः। (महा० शान्ति० प० अ० १३, १४)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पहियों से सात समुद्र बन गये। जैसे आज नास्तिक या साम्य-वादी होने में, स्वेच्छाचरण करने में गौरव मानते हैं, उसी प्रकार पहिले लोग अपने को वर्णाश्रमी ब्राह्मण क्षत्रिय कहने में अत्यन्त ही गौरव समझते थे। जिसने समाज के विरुद्ध तनिक भी आच-रण किया, उसे वर्णाश्रम से पृथक् कर देते थे। वह क्या करता! अनार्य म्लेच्छों के समाज में मिल जाता। उससे आर्य संस्कृति के पोषक घृणा करते थे, इसलिये उससे खान पान रोटी का सम्बन्ध नहीं करते थे कि ये हमारे सम्पूर्ण समाज को दूषित कर देगा। जैसे आज भी अमेरिकन आंग्लदेशीय काली जाति वालों के साथ स्वेच्छा से विवाह सम्बन्ध नहीं करना चाहते कि इससे हमारी जाती में सांकर्य फैल जायगा। हमारी सन्तति विशुद्ध न रह सकेगी।

श्रीमद्भागवत में कथा है, महाराज बाहुक को उनके कई वर्ग के क्षत्रिय शत्रुओं ने मिलकर उन्हें पराजित किया और उनका राज्य छीन लिया। वे वन में चले गये। वन में मर गये। उनकी रानी गर्भवती थी उसके गर्भ से महाराज सगर का जन्म हुआ। उन्होंने अपने शत्रु क्षत्रियों से बदला लेना चाहा। पहिले सेना एकत्र करके अपना राज्य लिया। फिर उन शत्रुओं का वध करना आरम्भ किया। वे अल्पवीर्य क्षत्रिय सगर के गुरु और्व के समीप गये और प्राणों की भिक्षा माँगी। गुरु ने सगर से कहा—"इन्हें मारो मत भैया!" सगर गुरु की आज्ञा कैसे टाल सकते थे। उन्होंने गुरु की आज्ञा से उनका वध तो किया नहीं किन्तु ऐसे धर्मभ्रष्ट डरपोक नीच क्षत्रिय आर्य वर्णाश्रम समाज में रहें यह अनुचित है, इसलिये महाराज ने उन्हें धर्मभ्रष्ट करके छोड़ दिया। उन्हें आज्ञा दे दी कि तुम कोई ऐसा चिन्ह रखो जिससे लोग तुम्हें सहज में ही देखते ही पहिचान लें कि ये धर्म-भ्रष्ट हैं। इसलिये उन तालजंघ, यवन, शक, हैहय और बर्बर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आदि जाति के क्षत्रियों के वेष विकृत कर दिये। किन्हीं के सिर मुड़वा दिये, किन्हीं के सिर मुड़ाकर मूँछ दाढ़ी रखा दी किन्हीं को आज्ञा दी कि तुम बाल खुले रखा करो, किन्हीं को अधमुंडित कर दिया, किन्हीं को कह दिया तुम कपड़ा ओढ़े रहा करो, किन्हीं के लुङ्गी लगा दी। इस प्रकार वे क्षत्रिय अनार्य हो गये।※

पद्मपुराण में उनका विवरण भी दिया है कि उस महाराज सगर ने अपने गुरु के वचनों का अभिनन्दन करके उनके वेष विचित्र बना दिया। यवनों का सिर मुड़वा दिया। शकों का आधा सिर मुड़वाया (जैसे गाड़ी लेकर घूमने वाली हाबूढ़ा भूमरिया अब तक सिर के आधे बाल रखते हैं) शकों के केश रखवा दिये, पह्लवों के दाढ़ी मूँछ रखवा दीं ये सबके सब वैदिक संस्कारों से यज्ञ यागादिकों से रहित हो गये। क्षत्रियों ने इनसे रोटीबेटी का सम्बन्ध त्याग दिया। ब्राह्मणों ने इनके संस्कार कराने छोड़ दिये। ये सब म्लेच्छों में मिल गये म्लेच्छ हो गये।

इसी प्रकार महाराज ययाति ने अपने पुत्र तुरुष्क, द्रुह्यु, यदु से वृद्धावस्था के बदले में युवावस्था माँगी। उन्होंने नहीं दी। समर्थ पिता का तिरस्कार किया। अतः ययाति ने शाप

※ यस्तालजंघान्यवनाञ्छकान् हैहयबर्बरान्। नावधीद् गुरुवाक्येन चक्रे विकृतवेषिणः। मुण्डांछ्मश्रुधरान् कांश्चन्मुक्तकेशार्धमुण्डितान्। अनन्तर्वाससः कांश्चिदवाससोऽपरान्।

(श्री० भा० ९ स्क० ८ अ० ५, ६, ७ श्लो०)

※ स तथेति तद् गुरुवचनमभिनन्द्य तेषां वेशान्यकारयत्। यवनान् मुण्डितशिरसोऽर्द्धमुण्डान् शकान् पह्लवांश्च श्मश्रुधरान् निःस्वाध्याय वषट्कारान् एतानन्यांश्च क्षत्रियांश्चकार तेचात्मधर्मपरित्यागात् ब्राह्मणैश्च परित्यक्ताः म्लेच्छतां ययुः।

(विष्णु पु० अं० ४ अ० ३ श्लो० २६)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देकर उन्हें राज्य भ्रष्ट कर दिया और ऐसे देशों में भेज दिया जहाँ अन्न नहीं उत्पन्न होता, सड़कें नहीं, जाड़ा बहुत पड़ता है। उनके तुरुष्क के वंश ही तुर्क कहलाये और उसी के नाम से देश (टर्की) प्रसिद्ध हुआ। ॐ

इन सब प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि आर्यों ने अपने समाज को विशुद्ध बनाये रखने को अधर्मी शीलसदाचार हीन पुरुषों को अपने से पृथक् कर दिया। अतः दो सभ्यता आरम्भ हो गईं एक आर्य सभ्यता, एक अनार्य सभ्यता। एक वैदिक सभ्यता, एक अवैदिक सभ्यता। भारतवर्ष के उपद्वीपों में रहने वाले तो विदेशी कहलाये और कन्याकुमारी से हिमालय तक के प्रान्त के रहने वाले–वर्णाश्रमधर्म को मानने वाले–आर्य भारतीय कहलाये। इन भारतीयों में भी जो वर्णाश्रम के अन्तर्गत थे वे तो वर्णाश्रमी भारतीय और जो वर्णाश्रमी से पृथक् थे वर्णाश्रम रहित भारतीय पञ्चम वर्ण के कहलाये। पीछे भारतीय शब्द 'हिन्दु' नाम से प्रचलित हो गया।

भारतीय संस्कृति के भी दो भेद हुए। एक तो उच्च वर्णों के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। दूसरे इनसे अतिरिक्त जङ्गली कोल, भिल्ल आदि जातियों वाले वर्णाश्रमी भारतीयों का यह आग्रह रहा कि हमारा रक्त विशुद्ध बना रहे इसमें सांकर्य न होने पावे, इसलिये वे अभारतीयों से और अवर्णाश्रमियों से अपना विवाह और खान-पान का सम्बन्ध

ॐ गुरुदारप्रसक्तेषुतिर्यंग्योनिगतेषु च। पशुधर्मेषु पापेषु म्लेच्छेषु भविष्यसि। यत्राश्वरथमुख्यानामश्वानां स्यादगतंन च हस्तिनां पीठकानाञ्च गर्दभानां तथैव च वस्तानां च गवां चैव शिविकायास्तथैव च। उडुपप्लवसंतारो यत्र नित्यंभविष्यति।

(श्रीम० भा० प० ८४ अ० १५, २१, २२ श्लो०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नहीं रखते थे। सामान्यतया व्यवहार में भारतीय और अवर्णाश्रमी एक ही समझे जाते थे, किन्तु फिर भी भारत में रहने वाले अन्त्यज पञ्चम वर्ण में थे ही। शूद्रों की उपजाति होने से वर्णाश्रम के अन्तर्गत ही हैं और फिर ये भारतीय सभ्यता के पोषक प्रशंसक और किसी-न-किसी अंश में मानने वाले ही हैं।

जाति भेद

अब वर्णाश्रमियों में भी कुछ ऐसे होने लगे, जो समाज में सांकर्य करने लगे। वर्णों में ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ और आश्रमों में संन्यास सबसे श्रेष्ठ माना जाता था। वर्णाश्रमी आनुलोम सांकर्य को तो किसी प्रकार सहन कर भी सकते थे, किन्तु प्रतिलोम सांकर्य उनकी दृष्टि में अत्यन्त ही निन्दनीय था वह अस्वर्ग्य और अनार्य आचरण था जैसे ब्राह्मण अपने वर्ण की कन्या में और अपने से इतर वर्ण की कन्या में संतति उत्पन्न कर सकता था। क्षत्रिय तीनों वर्णों की कन्या में वैश्य दो की और शूद्र अपने ही वर्ण की कन्या में सन्तति उत्पन्न करने का अधिकारी था यद्यपि नियम सामान्यतया ऐसा ही था, ब्राह्मणी से ब्राह्मण के वीर्यद्वारा जो संतति हो वही ब्राह्मण कहलाती थी।* इसके कई प्रतिवाद भी मिलते हैं, किन्तु सामान्य नियम यही था। ऋषियों की गणना मनुष्यों में नहीं की गई है। वे मनुष्यों से इतरयोनि माने गये हैं। वे जिस क्षेत्र में जिस संकल्प से जैसी चाहें वैसी सन्तति उत्पन्न कर सकते हैं। अनुलोम वर्णों में हुए विवाहों से बहुत सी जातियाँ बन गईं। जैसे ब्राह्मण ने क्षत्रिय कन्या से विवाह कर लिया उससे जो सन्तति हुई वह ब्राह्मणों से नीची और क्षत्रियों से ऊँची एक नई मूर्धाभिषिक्त जाति बन

* ब्राह्मण्यां ब्राह्मणाज्जातः स ब्राह्मण इतीरितः

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गई। कहीं-कहीं ऐसा भी वचन मिलता है कि पिता उच्चवर्ण का हो माता नीच वर्ण की हो उनकी सन्तति माता के वर्ण की ही समझी जायगी। अनुलोम जातियाँ तो उतनी बुरी नहीं मानी जाती थीं किन्तु प्रतिलोम विलोम जातियाँ दूषित मानी जाती थीं। जैसे ब्राह्मणी से क्षत्रिय सन्तति उत्पन्न करे तो वह निकृष्ट सूत जाति हुई। यदि शूद्र ने किसी ब्राह्मणी में सन्तति उत्पन्न कर दी, तो वह तो अत्यन्त नीच चाण्डाल जाति हुई। इसी प्रकार कोई संन्यासी हो गया तो उसने फिर किसी स्त्री से व्यभिचारजन्य सन्तति उत्पन्न कर दी तो वह भी आरूढ़ापतिता पत्य चाण्डाल हुई। ऐसे लोगों के साथ समाज कोई सम्बन्ध नहीं रखता था और वे सब पञ्चम वर्ण के माने जाते। आगे चल के अभारतीय विदेशी और ये पञ्चम वर्ण सबके सब अस्पृश्य अछूत या अन्त्यज माने जाने लगे। समाज को विशुद्ध बनाये रखने के लिये इनसे रोटी बेटी का सम्बन्ध तो कौन कहे छू जाने से स्नान करने की व्यवस्था स्मृतिकारों ने दी। निश्चय ही इसका उद्देश्य उनसे घृणा करना नहीं किन्तु समाज को विशुद्ध बनाये रखने का रहा होगा। स्मृतियों में बहुत-सी जातियों का अन्त्यज अस्पृश्य या अन्त्यावसायी बताया है। बहुत से जन्म से चाण्डाल या अन्त्यज थे अधिकांश कर्म से। चांडालपने का कर्म किया, इनकी गणना चांडालों में हो गई। या निकृष्ट कर्म किये जैसे कुत्ता का मांस खाना, मृतक चमड़े को उधेड़कर उससे व्यवसाय करना, मांस, सुरा, मछली बेचकर इनसे आजीविका करना। इन सब कर्मों के करने वाले भी अस्पृश्य माने गये।

इस प्रकार भारतीय या हिन्दू समाज अपनी विशुद्धता बनाये रखने को वर्णाश्रमी समाज से विरुद्ध आचरण करने वालों को बीन-बीन कर अपने से पृथक् करता गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्णाश्रम धर्म तो विशुद्ध बना रहा किन्तु अभारतीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

या अवर्णाश्रमियों की संख्या वृद्धि और बलवृद्धि होने लगी। विधर्मियों ने विदेशों में अपना राज्य स्थापित किया और भारत में भी पंचम वर्ण वालों की शक्ति बढ़ने लगी। इनके भी नदियों के किनारे जंगली प्रान्तों में राज्य स्थापित हुए। महाभारत में ऐसे बहुत से भारतीय अभारतीय राजाओं का उल्लेख है जो चारों वर्णों से पृथक् थे। चातुर्वर्ण्य से पृथक् जो भारतीय राजा थे उन्होंने तो अपना विकास भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही किया। वे ब्राह्मणों को मानते थे, उनके यहाँ पुरोहित भी ब्राह्मण थे, कुछ विशेष यज्ञों का भी ऐसे लोगों का अधिकार था। यहाँ तक कि कुछ वर्णाश्रमी राजाओं ने तो ऐसे राजाओं की कन्याओं के साथ विवाह भी किया है और समाज ने उन्हें किसी प्रकार स्वीकार भी किया।

धर्म का ह्रास

द्वापर तक क्षत्रियों का बोल-बाला रहा। वे ही अपने को संसार में सर्वश्रेष्ठ शूर-वीर सभ्य विश्वविजयी मानते थे, किन्तु शनैः-शनैः अधर्म वृद्धि हुई। धर्म का ह्रास हुआ। वर्णाश्रमियों की शक्ति क्षीण होने लगी। जिन लोगों को हमने बलपूर्वक अपने से पृथक् कर दिये थे, विदेशों में जिन्होंने एक अनार्य संस्कृति का विकास किया था वे शक्तिशाली होकर भारत के ऊपर चढ़ाई करने लगे। भारतीय सभ्यता को मेटने के लिये कटिबद्ध हो गये। जब वे बराबर के बली और शक्तिशाली हो गये तो उन्होंने इस धर्मप्रधान पवित्र देश पर चढ़ाई आरम्भ कर दी। भगवान् श्रीकृष्ण के समय में ही काल नामक यवन ने मथुरा पर चढ़ाई की थी। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि कालयवन तीन करोड़ म्लेच्छों की सेना लेकर यादवों को अपने समान बली सुनकर लड़ने आया था। यथार्थ में वह बड़ा बली था। उसकी उत्पत्ति

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के विषय में भी पुराणों में यही लिखा है कि यादवों के पुरोहित गर्ग किसी हँसी की बात पर असन्तुष्ट होकर विदेशी यवन राजा के यहाँ गये। उनकी स्त्री के कोई सन्तान नहीं थी। इन्होंने यादवों से बदला लेने के लिये उसकी स्त्री में सन्तान उत्पन्न की। उन्हीं के वीर्य से कालयवन उत्पन्न हुआ। जिसने यादवों के दाँत खट्टे कर दिये। उसके महान् बली होने का यही प्रमाण है कि लीला से ही सही, श्रीकृष्ण भगवान् को भी उसके डर से अपनी जन्मभूमि पैतृक राज्य को सदा के लिये छोड़कर भागना पड़ा और समुद्र के बीच में किला बनाकर रहना पड़ा।

भारतीय समाज के सम्बन्ध में शिथिलता

कालयवन को भगवान् ने बड़े कौशल से महाराज मुचुकुन्द की दृष्टि से मरवा दिया। कुछ यवन अपने देश को लौट गये। जो यहाँ रह गये वे भारतीय समाज में घुलमिल गये। प्रतीत होता है उस समय भारतीय समाज ने अपनी पृथक् करने की नीति को छोड़ दिया था या ढीला कर दिया था। नहीं तो ये यादव वास्तव में शुद्ध क्षत्रिय नहीं थे। जैसे ययाति का तुर्वसु को शाप था। जिनकी सन्तति टर्की में तुर्क हैं, वैसे ही यदु को भी शाप था। वे भी क्षत्रिय धर्म से पृथक् कर दिये गये थे। उन्हें भी राजा होने का—क्षत्रियों के साथ सम्बन्ध करने का—अधिकार नहीं था। इस बात को स्वयं भगवान् ने कंस को मारने के अनन्तर स्वीकार किया है।* किन्तु भगवान् की महत्ता के कारण युगधर्म के कारण क्षत्रियों ने इस हठ को छोड़ दिया। यादवों को अपने में मिला लिया। उनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध करने लगे, उन्हें राजा भी स्वीकार कर लिया। जब

* ययाति शापाद् यदुभिर्नासितव्यं नृपासने।

(श्री० भा० १० स्क० ४५ अ० १३ श्लो०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्रीकृष्ण के पुत्र जाम्बवतीसुत साम्ब ने दुर्योधन की पुत्री का बलपूर्वक स्वयम्वर से अपहरण किया और उसे कौरवों ने पकड़ कर कारावास में डाल दिया, तब बलदेवजी उसे छुड़ाने आये थे। उन्होंने अपने बल के अभिमान में कौरवों से कहा था, "राजाधिराज महाराज उग्रसेन ने तुम लोगों को एक आज्ञा दी है उसे तुम सब सावधानी से सुनो और सुनकर उसका पालन करो। साम्ब को जो तुमने कारावास में डाल रखा है उसे छोड़ दो।" यह सुनकर क्रोध करके व्यङ्ग के स्वर में दुर्योधन ने कहा था—"अहोभाग्य! देखो काल की कैसी दुरत्यय गति है। जिन यादवों को पैर की जूती के समान कोई पूछता भी नहीं था। जिन्हें राज्यसिंहासन पर बैठने का क्षत्रियों के साथ विवाह सम्बन्ध करने का सनातन अधिकार नहीं था उन्हें हमने अपने समान अधिकार दे दिया। विवाह सम्बन्ध आरम्भ कर दिये। चमर, व्यञ्जन, शङ्ख, श्वेत छत्र मुकुट तथा राजसिंहासन के उपभोग का राजाओं के समान अधिकार दे दिया, कुंती का अपने यहाँ विवाह कर लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि आज ये राजाधिराज बनकर हमें आज्ञा देने की धृष्टता कर रहे हैं, सर्प को पिलाया हुआ दूध विष को बढ़ाता है, हमारी कृपा से ही तो ये इतने बड़े क्षत्रियों में मिले, अब हमें ही आज्ञा दे रहे है। अच्छी बात है अब इनके फिर राज्यचिन्ह छीन लो और फिर जाति भ्रष्ट कर दो।* बात तो सत्य ही थी। यादव

---

* एते यौनेन सम्बद्धाः सहशय्यासनाशनाः।
वृष्णयस्तुल्यतां नीता अस्मद्दत्तनृपासनाः॥
चामरव्यजने शङ्खमातपत्रं च पांडुरम्।
किरीटमासनं शय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया॥
अलं यदूनां नरदेवलांछनैर्दंतुः प्रतीपैः फणिनामिवामृतम्।
येऽस्मत्प्रसादोपचिता हि यादवा आज्ञापयन्त्यद्य गतत्रपा बत॥
(श्री० भा० १० स्क० ६८ अ० २५ से २७ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्षत्रियों से बहिष्कृत थे, कुरुवंशियों ने ही इन्हें जाति में मिलाया था। बहुत से क्षत्रिय अब भी विरोधी थे। इसीलिये बलभद्रजी ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया कि तुम लोग झूठ बोलते हो। तुम लोगों ने हमें कब मिलाया। इस बात को तो उन्होंने भी मान लिया, अब वे अपनी झेंप मिटाने को भगवान् के गुण गाने लगे, महत्ता सिद्ध करने लगे।

विदेशियों का भारतीय समाज में सम्मिलन

यहाँ इस प्रसंग को उद्धृत करने का अभिप्राय इतना ही है कि भारतीय समाज के शुभचिन्तकों ने अपनी निर्बलता का अनुभव किया। उन्होंने सोचा—"अब हम दूर-दूर, हटो, हटो कहकर अपने समाज की भलाई न कर सकेंगे। अब हमें मिलाने की अपनाने की नीति को ग्रहण कर लेना चाहिए। इसीलिये हम देखते हैं अर्जुन ने उलोपी नागवंश की कन्या के साथ विवाह किया। भगवान् श्रीकृष्ण की भी कई स्त्रियाँ ऐसी ही थीं जैसे जाम्बवती। पहिले तो इस बात पर बड़ा ध्यान रखा जाता था कि स्ववर्ण की कन्या ही हो, किन्तु देशकाल की परिस्थिति को सम्मुख रखकर समाज ने "स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि" वाली नीति को भी कुछ-कुछ स्वीकार कर लिया।

कालयवन के अनन्तर और सिकंदर के चढ़ाई के बीच में भी विदेशियों ने भारत पर चढ़ाई की होगी; किन्तु, उसका विशेष विवरण नहीं मिलता। सिकन्दर ने भारत पर चढ़ाई की और वह लूटपाट कर अपने देश को लौट गया। उनके साथ के लोग कुछ रह गये होंगे उन्हें हिन्दू समाज ने पचा लिया, भारतीय संस्कृति के रँग में रँगकर भारतीय बना लिया, फिर हूण, शक ये लोग आये और इन्हें हिन्दू समाज ने अपने में स्वीकार कर लिया। आप इतिहास को उठाकर देखिये कनिष्क हविष्क ये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भारतीय नाम नहीं हैं। ये सब शक हैं। हविष्क का लड़का हुआ वासुदेव। यह शुद्ध भारतीय नाम है। यह बड़ा प्रसिद्ध शैव राजा हुआ। विदेशियों का आक्रमण हुआ, किन्तु इन्हें भारतीय समाज ने एक साथ नहीं, क्रमशः अपना लिया। इन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। समाज ने इनको देश-काल की परिस्थिति में समझकर अपने में मिला लिया।

क्षत्रिय वंश की विशुद्धता भी विलुप्त हो चुकी थी। अब तो समाज को एक ही चिन्ता थी, भारतीय संस्कृति बनी रहे, विदेशियों का इस पवित्र भूमि पर आधिपत्य न हो, इसी का प्रयत्न करना चाहिये। नन्दवंश के अनन्तर चन्द्रगुप्त मौर्य को चाणक्य ने सम्राट् बनाया। यह शुद्ध क्षत्रिय नहीं था। मुरा नामक नाइन से उत्पन्न हुआ था, किन्तु चाणक्य मुनि की कृपा से सम्राट् बन गया।

ऐसा सुना जाता है सम्राट् होने के अनंतर अन्तःपुर में रहने वाली किसी राजकन्या से इसका प्रेम हो गया था और उसे इसने वचन भी दे दिया था, तेरे साथ विवाह कर लूँगा। जब यह बात चाणक्य मुनि को मालूम हुई तो उन्होंने उस विवाह को रोक दिया। चन्द्रगुप्त बहुत रोया गिड़गिड़ाया राज्यसिंहासन छोड़ने को उद्यत हो गया, किन्तु उसकी एक भी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। कई राजनीतिक कारणों को दृष्टि में रखकर परम कूटनीतिज्ञ महामुनि चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का विवाह यूनान के राजदूत सेल्यूकस की लड़की के साथ कराया और उसी से सम्राट विन्दुसार उत्पन्न हुआ।

आज अस्पृश्य जातियों को उभाड़कर उनमें भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा उत्पन्न की जा रही है, नहीं तो पहिले लोग इसी में अपना गौरव समझते थे कि हम भारतीय हैं हिन्दुधर्म को माननेवाले हैं। हम भारतीय समाज के अन्तर्गत हैं। विदेशी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लोग भारतीय समाज में मिलने को लालायित रहते थे अपने आचरण भारतीय बनाते थे और शनैः-शनैः भारतीय समाज में मिल जाते थे। आभीर, जाट, गूजर इन जातियों ने कितने हूण शक आदि को अपने में मिला लिया। पञ्जाब के जाट अब भी चाहे जिस जाति की स्त्री को रख लेते हैं।

कहने का अभिप्राय इतना ही है कि युग के कारण धर्म के ह्रास के कारण, अपनी दुर्बलता के कारण वर्णाश्रमधर्म में तो शिथिलता अवश्य आ गई, किन्तु हमने विदेशी संस्कृति को स्वीकार नहीं किया। विजेता विदेशियों को भी अपनी ही संस्कृति में मिला लिया, उन्हें भी अपने समाज का एक अङ्ग बना लिया। इसी समय बौद्ध धर्म का सर्वत्र विकास हुआ। उसने वर्णाश्रम धर्म पर बड़ा आघात किया, किन्तु वह धर्म भारतीय था। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत होने से उसने भारतीयता पर आघात नहीं किया। यही नहीं उसने भारतीय सभ्यता का संसार के कोने-कोने में विदेशों में सर्वत्र प्रचार किया। यही सभ्य समाज के लोग भारतीय संस्कृति के प्रशंसक बन गये और उन्होंने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया। श्रीशङ्कराचार्यजी के समय में भारत में बौद्ध धर्म का बोलबाला था। श्री श्री शङ्कराचार्यजी ने बौद्ध धर्म के स्थान में पुनः सनातन वैदिक धर्म की स्थापना की। बौद्ध धर्म में यद्यपि वर्णाश्रम धर्म के लिये कोई विशेष स्थान नहीं था, सभी जाति के स्त्री पुरुष भिक्षु भिक्षुणी बन जाते थे, जातियों में सांकर्य भी हो गया था, फिर भी श्री शङ्कराचार्यजी ने समस्त बौद्धों को शुद्ध कर लिया, उन्हें सनातनी बना लिया। इसमें उन्हें अधिक प्रयास नहीं करना पड़ा। क्योंकि बौद्धों की संस्कृति पृथक् नहीं थी। बौद्ध भारतीय संस्कृति के ही अङ्ग थे। बौद्ध धर्म का विकास भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत हुआ। केवल कुछ दार्शनिक विचारों में कुछ सामाजिक मान्यताओं का मतभेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

था, जो वैदिक धर्मावलम्बियों के हाथ में सत्ता आते ही उनका अन्त हो गया। जो बौद्ध धर्म भारत में ही उत्पन्न हुआ भारत से ही बढ़कर उन्नत होकर चीन, जापान, सुमित्रा, लङ्का आदि देशों में फैला, उसी का अपनी जन्मभूमि भारत में नाम भी न रहा। एक भी बौद्ध धर्मावलम्बी भारत में न रहा। समाज ने समस्त बौद्धों को पचा लिया अपने में मिला लिया उनमें बहुत से विदेशी भी थे, भारतीय संस्कृति में घुल मिलकर वे भी भारतीय हो गये।

विजयी विदेशी

इसके अनन्तर हमारी राजनीतिक स्थिति निर्बल हो गई। भारतीय राजा आपस में ही लड़ाई झगड़े करने लगे। इतने पर भी हम विदेशी विधर्मी अनार्यों को हेय दृष्टि से देखते थे, उन्हें छूना भी पाप समझते थे। जो विदेशी भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठ समझकर इसमें मिलना चाहता था, उसे एक बार में नहीं शनैः-शनैः मिला लेते थे। किन्तु विदेशी संस्कृति से बचने के लिये भारतीय समाज सदा सतर्क बना रहता था। हमारी निर्बलता को समझकर विदेशी मुसलमानों ने हमारे देश पर आक्रमण किया। भारत का भाग्य विपरीत होने से मुसलमानों की विजय हुई। राजनीतिक सत्ता उन विदेशी विधर्मी भारतीय संस्कृति के कट्टर शत्रुओं के हाथ में आई। यह भी बात नहीं वे लूटमार करके माल धन लेकर ही भारत से चले गये हों। वे तो देश विजय करके भारत में ही बस गये।

हमारा सामाजिक कवच

अब हिन्दु समाज के सम्मुख एक जटिल प्रश्न आ गया। राजनीतिक सत्ता भी सब विधर्मियों के हाथ में। अब यदि उन्हें हम अपने समाज में मिलाते हैं, तो वे विजयी हैं अधिकारारूढ़ हैं,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्हें हम अपने में मिलावेंगे तो हम स्वयं ही अपनी भारतीय संस्कृति को खोकर उनमें मिल जायेंगे। हम अपने सनातन वैदिक धर्म से हाथ धो बैठेंगे। इसलिये अब उन्होंने पुनः अपनी संस्कृति कीरक्षा के लिये बहिष्कार का आश्रय लिया। स्मृतिकारों ने 'न नीचो यवनात्परः' 'यवन से बढ़कर कोई नीच नहीं' ऐसा कहा। मुसलमानों की अन्य अभारतीय बातों को हम सहन भी कर लेते, किन्तु उसमें एक यह बड़ा दोष था कि वे गौ का मांस खाते थे। हमारे यहाँ जितने भी गोमांस के खाने वाले हैं उनको अछूत या अस्पर्श कहा गया है।※ हिन्दु समाज ने अपनी संस्कृति अपने धर्म की रक्षा के लिये निर्णय किया कि विधर्मी या विदेशियोंसे अपना कोई सम्पर्क न रखें। जो इन से सम्पर्क रखेगा, वह भी हिन्दू समाज से बहिष्कृत कर दिया जायगा। जो विदेशों से विधर्मी आये थे, वे संख्या में बहुत ही न्यून थे। हिन्दू समाज ने उनका बहिष्कार कर दिया। अब उन्हें कुछ लोगों को अपने समाज में मिलाना था। अतः बहुतों को धन का, बहुतों को सुंदर स्त्रियों का, बहुतों को ग्राम, भूमि तथा राज्य का लोभ देकर अपने में मिला लिया, वे लोग, लोभ के वशीभूत होकर मुसलमान हो तो गये, किन्तु, उनका हृदय हिन्दु ही बना रहा, वे भारतीय संस्कृति को मन से न छोड़ सके।

भारतीय संस्कृति को मिटाने के लिये विजयी विधर्मियों ने अनेक उपाय किये। सुनते हैं उन्होंने ग्रामों में जा जाकर कूओं में गोमांस डलवा दिया। जिन-जिन लोगों ने उस कुएँ का पानी भूल में भी पी लिया, उन्हें भी हिन्दु समाज से बहिष्कृत कर दिया। अन्त में वे विवश होकर हृदय से नहीं, ऊपर से मुसलमान हो गये। लड़कियोंको बलपूर्वक मुसलमान पकड़ लेते थे। जिसका

※ एतेऽन्त्यजाः समाख्याता ये चान्ये च गवाशनाः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

एक बार भी विधर्मी से संसर्ग हो गया, वह समाज के योग्य रही ही नहीं। हमने तो यहाँ तक सुना कि जिन्होंने भूल से मुसलमानों के हाथ से खा लिया वे तो समाज से निकाले ही गये। यदि भोजन करते हुए मुसलमान के समीप कोई बैठ गया और उसके जूठे भोजन की वायु भी किसी हिन्दु को लग गई, समाज ने उसका भी बहिष्कार कर दिया।

भारत में दो संस्कृतियाँ

कुछ लोगों का कहना है हिंदु समाज ने ऐसा करके बड़ी भारी भूल की। यदि उस समय इतनी कड़ाई न की जाती तो आज हममें से ही १० करोड़ अभारतीय संस्कृति के पोषक मुसलमान न बनते। यह प्रश्न तो विचारणीय है। हमारा तो ऐसा विश्वास है कि हिन्दु समाज उस समय इतनी कड़ाई न करता, तो आज भारतीय संस्कृति का नाम भी न रहता। सत्ता मुसलमानों के हाथों में थी, हम उन्हें मिलाते, तो हम मिला नहीं सकते थे हमें ही उनमें मिल जाना पड़ता और उनकी हाँ-में-हाँ मिलाकर हम अपनी रही सही सभ्यता से भी हाथ धो बैठते। अब उचित हुआ या अनुचित इसका प्रश्न नहीं किन्तु हमारी दुर्बलता से अब भारत में दो संस्कृतियाँ बढ़ने लगीं। एक तो मुसलमानी संस्कृति दूसरी भारतीय या हिन्दु संस्कृति। जो भारतीय मुसलमान होते उनका हृदय तो हिन्दुओं के ही साथ होता, किन्तु हमारे द्वारा तिरस्कृत होने पर वे विवश होकर अपने को मुसलमान कहने लगते।

जिन दिनों मैं व्रजकी परिक्रमा कर रहा था, उन दिनों मैंने कामा के पास भरतपुर राज्य में बहुत से गाँव देखे। लोगों ने बताया इन लोगों की गणना तो मुसलमानों में ही है किन्तु इनका आचार-विचार रहन-सहन सब हिन्दुओं जैसा है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

खोज करने से पता चला इनके पूर्वज कोई राजवंश के सरदार थे। उनसे भूल में एक वनगाय–नील गौ–की हत्या हो गयी, समाज ने उन्हें कड़ा दण्ड दिया। कलङ्की वेष बनाकर गाँव-गाँव गौ की पूँछ को लकड़ी में बाँधकर भीख माँगो, साल भर तक तीर्थ करो, तब शुद्धि होगी। उसने ऐसा ही किया। किसी मुसलमान काजी की उस पर दृष्टि पड़ गई, उसने उसे भाँति-भाँति से समझाया, विविध प्रकार के प्रलोभन दिये। अन्त में वह उसकी बातों में आ गया। मुसलमान हो गया। मुसलमान नाम से तो बन गया, किन्तु हृदय में तो भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग था। अब तक उनके वंशजों के सभी आचरण हिन्दुओं के से हैं नाम भी हिन्दुओं के जैसे हैं। इस प्रकार उस कठिन समय में हमने अपनी संस्कृति की रक्षा कर ली। हिन्दुत्व की रक्षा के लिये हमें कितने-कितने बलिदान करने पड़े। कितनों के सिर धड़ से उड़ाये गये, कितनों को जीवित जलाया गया, कितनों को दीवालों में चुनाया गया इन सब घटनाओं का इतिहास साक्षी है। उनका यहाँ उल्लेख करना व्यर्थ है। कहने का अभिप्राय इतना ही है कि यवनों के शासन काल में हमने अपनी भारतीयता की रक्षा तो कर ली, किन्तु अपने में से पञ्चमांश भाइयों को उनकी इच्छा के विरुद्ध दूसरे समाज में भेजकर रक्षा की उस समय और कोई उपाय ही नहीं था।

शनैः-शनैः मुसलमानी सत्ता भारत से समाप्त होने लगी। भारतीय संस्कृति का पुनः उत्थान होने लगा। इधर राजपूताने में महाराणा प्रताप ने अपनी तपश्चर्या और वीरता दिखाई, इधर महाराष्ट्र के छत्रपति शिवाजी ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिये गेरुए रङ्ग की ध्वजा उड़ाई, उधर पञ्जाब में गुरु गोविन्द सिंह ने अभारतीय संस्कृति की नाश की शपथ ग्रहण की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि भारत में इस अभारतीय संस्कृति का विनाश उसी प्रकार हो जायगा, जिस प्रकार बौद्ध धर्म की सत्ता भारत से चली गई थी। समाज से त्रस्त अथवा अपमानित होकर अथवा लोभवश हिन्दु लोग मुसलमान तो हो गये थे, किन्तु भारतीय संस्कृति का उनके मन में आदर बना ही रहा और उसकी रक्षा वे इसी आशा से अब तक करते रहे कि भारतीय समाज कभी तो अपनी भूल को समझेगा, कभी फिर हमें अपने में मिलावेगा।

गोरों का आगमन

इसी बीच गोरे विदेशी हमारे देश में आये। उन्होंने देखा इतने दिनों से मुसलमान इस देश में बस रहे हैं। किन्तु हिन्दुओं ने उन्हें अपनाया नहीं। वे अपने संस्कृति को भाँति-भाँति के कष्ट सहकर भी बनाये हुए हैं। मैं इतिहास का तो विद्यार्थी हूँ नहीं। जहाँ तक मेरा अनुमान है, इन गोरे विदेशियों में भी फ्रांसीसी सबसे पहिले भारत में आये। यहाँ उन्होंने अपने कुछ उपनिवेश भी स्थापित किये जो अब भी हैं। पांडुचेरी, चन्दन नगर आदि में अभी तक फ्रेंच राज्य ही है। फ्रांसीसियों को हम देहाती लोग फिरङ्गी कहते थे। रूप रङ्ग में अँगरेज भी फ्रांसीसियों जैसे ही थे। इसलिये अँगरेज को भी हम लोग फिरङ्गी ही कहते थे। गदर के समय में भारतीयों के मन में ये भाव पैदा हो गये थे कि जहाँ भी फिरङ्गियों को देखो वहीं मार डालो। जब पहिले-ही-पहिले भारत में नल लगे थे, तब हम देहातों में भजन सुना करते थे 'फिरङ्गी नल मत लगवावे। नल को पानी बहुत बुरो मेरी तबियत घबरावे। फिरङ्गी नल मत लगवावे।''

ये जो फिरङ्गी हमारे देश में आये, इनमें सदाचार की बहुत

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कमी थी विशेषकर इनकी स्त्रियाँ बहुत स्वतन्त्र थीं, हमारे देश में स्त्रियों की इतनी स्वतन्त्रता उस समय अत्यन्त ही आश्चर्य-जनक समझी जाती थी। उन विदेशी स्त्रियों का हमारे भारतीयों से संसर्ग हो गया। इससे एक नया रोग उत्पन्न हो गया। पहिले हमारे देश में ये गरमी सुजाक रोग नहीं थे। फ्रांसीसी स्त्रियों के संसर्ग से ये रोग आये इसलिये नवीन वैद्यक ग्रन्थों में इन रोगों को फिरङ्गरोग कहा गया है। इसलिये समाज ने मुसलमानों की भाँति इनका भी बहिष्कार किया। इन गोरे विधर्मियों ने हिन्दू मुसलमानों की खाई को समझ लिया वे समाज की दुर्बलता और मुसलमानों की विलासिता से भी परिचित हो गये। शनैः-शनैः वे हिन्दु और मुसलमानों के बीच में मध्यस्त हो गये। हिन्दुओं को बलवान देखा, तो उनकी ओर हो गये, मुसलमानों को बली देखा तो उनकी ओर हो गये। सारांश इतना ही है कि मुसलमानों से सत्ता अँगरेजों के हाथ में आ गई।

मुसलमानी सत्ता समाप्त होते ही मुसलमानी धर्म भी समाप्त हो गया। इतने दिन मुसलमान रहने पर भी लोगों की मुसलमानी सभ्यता में आस्था नहीं हुई वे हिन्दु समाज में आने को लालायित हो रहे थे, किन्तु लगभग हजार वर्ष से 'दूर-दूर' करते-करते हिन्दु समाज का दृष्टिकोण संकुचित हो गया था। उसकी पाचन शक्ति मन्द पड़ गयी थी, सहस्रों वर्ष की दासता के कारण उसे मन्दाग्नि हो गई थी। न राजनीतिक सत्ता ही रही न आध्यात्मिक बल ही पहिले जैसा रहा। दूसरों को मिलाकर अपने में पचा जाने वाली शक्ति समाज में रही ही नहीं।

एकता का प्रयत्न

बीच-बीच में साधु सन्तों और महात्माओं ने ऐसा प्रयत्न किया कि यह खन्दक भर जाय, हिन्दु मुसलमान एक हो जायँ,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

गुरु नानक, कबीरदास, दादूदयाल तथा बुल्लेशाह आदि महात्माओं ने इस दिशा में बहुत प्रयत्न किये, किन्तु समाज के हृदय में यह बात पैठी नहीं। क्योंकि ये लोग वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानते थे और यही हिन्दु धर्म का प्राण है। जब मुसलमान शासन से रहित और शक्तिहीन हो गये, सत्ता सब अँगरेज के हाथों में आ गई, तो वे अनुभव करने लगे कि सत्ता-हीन होकर हमारा अस्तित्व भारत में न रहेगा। अन्ततोगत्वा वे थे तो भारतीय ही। किसी कारण विशेष से उन्हें इस्लामी संस्कृति स्वीकार करनी पड़ी थी अतः कुछ ऐसी लहर चली कि हिन्दु मुसलमान सब एक होकर इन विदेशी अँगरेजों को भगावें उसी का प्रतीक सन् १८५७ का गदर हुआ, वह एक प्रकार की राज्य क्रान्ति ही थी, जो दुर्भाग्य से असफल हुई।

अब अँगरेजों को निश्चय हो गया कि हम बिना हिन्दु मुसलमानों में भेद डाले यहाँ नहीं रह सकते। मुसलमान विद्या में, बुद्धि में, संख्या में, सदाचार में तथा धन में हिन्दुओं से अत्यन्त ही पिछड़े थे। बड़े-बड़े सरकारी पदों पर सर्वत्र हिन्दु-ही-हिन्दु थे। अँगरेजों ने मुसलमानों को उभाड़ा, अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये की गई।

इधर राष्ट्रीय महासभा ने स्वराज्य का आन्दोलन भी उठा रखा था। अँगरेज शासन देना नहीं चाहते थे। स्पष्ट मना भी नहीं कर सकते थे। वे यही कहते थे तुम दोनों आपस में लड़ते हो इसीलिये हम शासन कर रहे हैं, तुम आपस में मिल जाओ हम तुम्हें स्वराज्य देकर चले जायँगे। इधर उधर से तो यह कहते थे और भीतर-ही-भीतर मुसलमानों को विशेष अधिकारों के लिये भड़काते थे। मुसलमान तो संख्या में कम थे और भी उन पर कुछ साधन नहीं थे। स्वराज्य की अकांक्षा हिन्दुओं

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में अधिक थी, इस कारण से मुसलमान अपने विशेष अधिकारों के लिये अड़ गये।

राष्ट्रीय विचार के हिन्दुओं ने सोचा—"इन्हें अप्रसन्न न करो जो ये माँगें वह दे दो, किसी तरह इस विदेशी सत्ता को यहाँ से निकालो तब फिर इनसे तो भुगत लेंगे।" इसीलिये राष्ट्रीय महासभा के लखनऊ अधिवेशन में मुसलमानों के विशेषाधिकार स्वीकार किये गये। नौकरियों में उनके स्थान सुरक्षित रखे गये। धारा सभाओं में अपनी जनसंख्या से दुगुने तिगुने अधिकार दिये गये। एक कहावत है "लाभात् लोभः प्रजायते" लाभ से लोभ बढ़ता है। अब मुसलमानों की धारणा यह हो गई कि हमारे बिना हिन्दु कुछ कर नहीं सकते, अतः जहाँ तक हो इनकी स्वतन्त्रता के मार्ग में रोड़े अटकाओ।" इन्हीं विचारों से मुसलमानों में राष्ट्रीय विचार के बहुत ही कम निकले। कुछ विशेष मुसलमानों को छोड़कर सभी ने स्वतन्त्रता के विरुद्ध अँगरेजों का साथ दिया। अँगरेजों ने भी उनकी राजभक्ति को सहर्ष स्वीकार किया और उन्हें सामूहिक दण्डादि से मुक्त भी कर दिया।

हाँ, तो मेरा अभिप्राय यह है कि मुसलमानों में स्वयं हिन्दुओं के विरुद्ध होने की भावना स्वल्प थी, उन्हें स्वार्थी शासकों ने उभाड़ा और उन्हें हिन्दुओं के विरुद्ध कर दिया।

सभी समाजों में कुछ कलहजीवी पुरुष होते हैं। मुसलमानों में भी कुछ ऐसे थे, जिनका स्वार्थ हिन्दु और मुसलमानों को सदा लड़ाये रहने में था। विदेशों से मुसलमान तो बहुत थोड़े आये थे, जो भी हुए सब यहीं से हुए। उनके रक्त में हिन्दुत्व था हृदय में हिन्दु संस्कृति के लिये श्रद्धा थी, मनमें अपने भारतीय समाज के मिलने की आकांक्षा थी। किन्तु, हिन्दु समाज ने उन्हें लेना स्वीकार नहीं किया। जो राजपूत स्वतन्त्र जाति के थे उनमें

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तो कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने, मुसलमान स्त्रियों को शुद्ध करके उनसे विवाह कर लिया था। उदयपुर के महाराजा बापा रावल ने मुसलमान राजकुमारी से विवाह किया था और उससे हुई संतति राजपूत ही कहलाई। मारवाड़ के राजा रायपाल ने ६०० मुसलमान स्त्रियों को छीनकर उनका विवाह अपने सरदारों के साथ कर दिया था।

सम्वत् १५४८ वि० में बादशाही हाकिम मल्लूखाँ मारवाड़ के पीपाड़ ग्राम के कोसाने के तालाब से १४० राजपूत कन्याओं को बलपूर्वक पकड़ ले गया था। इस पर मारवाड़ के राजा राव सातल ने उस पर चढ़ाई की उन कन्याओं को उनके हाथ से छीन लाये और साथ ही घुड़लाखाँ सेनापति की सुन्दरी कन्या को छीन लाये जिसका विवाह अपने एक प्रसिद्ध सरदार के साथ किया। सुनते हैं राजपूताने में जो गणगौरियों के दिनों लड़कियाँ 'घुड़ल्यो घुमेलो' नामक खेल खेलती हैं, वह उस घुड़लाखाँ की लड़की ने ही अपने पति से कहकर पिता की स्मृति में आरम्भ कराया था।

हमारे काशी के पण्डितराज जगन्नाथ ने भी बादशाह दाराशिकोह की एक दासी कन्या से विवाह किया था। सुनते हैं वे उसे बहुत प्यार करते थे। वह भी संस्कृत में कविता करती थी। काशी के पंडितों ने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया, तब उन्होंने गंगा के किनारे जाकर बड़े ही करुण स्वर में गंगाजी की स्तुति की वे एक-एक श्लोक पढ़ते थे। गंगाजी एक-एक सीढ़ी चढ़ती जाती थीं वे जहाँ बैठे थे वहाँ गंगाजी की सीढ़ियाँ नीचे थीं। जिस समय उन्होंने श्लोक पढ़ा कि गङ्गाजी ने प्रत्यक्ष होकर उन्हें गोदी में बिठा लिया। तब पंडितों ने कहा—"अच्छी बात है अब हमने आपको अपना लिया।"

पण्डितराज ने नेत्रों में अश्रु भरकर कहा—"अब तुमने

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्या अपना लिया अब तो मुझे पतितपावनी कलिमल हारिणी भगवती भागीरथी ने ही अपना लिया।" वे गंगाजी के गर्भ में विलीन हो गये। वह श्लोकों का स्तोत्र "गङ्गालहरी" के नाम से सर्वत्र विख्यात है। उसे पढ़कर कितनों को गङ्गाजी का साक्षात् दर्शन हुआ, कितने को मुक्ति मिली। गङ्गाजी को मानने वाला ऐसा कोई अभागा ही हिन्दू होगा जिसने गङ्गालहरी का नाम न सुना होगा। कई श्लोकों में पण्डितराज ने अपनी मार्मिक वेदना बहुत ही करुणापूर्ण शब्दों में भगवती जाह्नवी के सम्मुख उपस्थित की है।

इस प्रकार मुसलमानों को शुद्ध करके अपने में मिलाने की प्रथा तो प्रचलित रही, किन्तु इसे सर्व साधारण समाज ने स्वीकार नहीं किया। राजा तो राजा ही थे, उनके विरुद्ध कौन उँगली उठा सकता था। पण्डितराज जगन्नाथ का उदाहरण एक अपवाद-स्वरूप है। कवि तो स्वतन्त्र प्रकृति के होते ही हैं, वे समाज की अपेक्षा नहीं रखते। वैसे सर्वसाधारण समाज ने विदेशी तथा विधर्मियों को अपने समाज में न घुसने देने की सतर्कता रखी। अपने समाज से लोगों को निकालते तो रहे, उन्हें अपने में मिलाने की बात कभी सोची भी नहीं। हिन्दु समाज की एक ही धारणा थी, यदि ये विदेशी विधर्मी संस्कृति वाले हममें मिल गये, तो हमारी अपनी भारतीय संस्कृति सुरक्षित न रहेगी। इसीलिए समाज ने बड़ी वीरता से अपनी संस्कृति की शासकों से रक्षा की। यदि कोई दूसरा समाज होता तो शासकों की संस्कृति में घुलमिलकर एक हो जाता, किन्तु यह तो भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है, जो आज लगभग डेढ़ हजार वर्ष से दासता की बेड़ियों में जकड़े रहने पर भी किसी-न-किसी अंश में अपनी संस्कृति को बचाये हुए है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मुसलमानों की हिन्दु समाज में मिलने की व्यग्रता

यह तो हम पीछे ही बता आ रहे हैं कि समाज के बहिष्कार से अथवा किसी सांसारिक प्रलोभन से जो हिन्दु समाज से पृथक् हो गये हैं, उन्होंने आज तक उस विदेशी संस्कृति को स्वीकार नहीं किया है। जो अत्यन्त निम्न वर्ग के हैं, जिनके लिये धर्म, अधर्म, समाज, प्रतिष्ठा कोई महत्व की वस्तु नहीं जिनका व्यवसाय ही गुण्डापन है, उन्हें तो संस्कृति और धर्म से काम ही क्या, वे तो जिस समाज में भी रहेंगे, गुण्डापन से अपने स्वार्थ को सिद्ध करेंगे।

हिन्दु समाज में ऐसे गुण्डों के लिये धार्मिक सामाजिक बंधन अधिक होने के कारण खुलकर खेलने का अवसर कम है। मुसलमानी समाज में उन्हें अनाचार कदाचार करने की अधिक स्वतन्त्रता है, अतः ऐसे लोगों को छोड़कर जो सामूहिक रूप से कुलीन परिवार के लोग मुसलमान हुए हैं, उन्हीं ने अपने हिन्दुत्व को–अपनी प्राचीन संस्कृति को–अब भी बनाये रखा है। गुण्डे तो सभी समाजों के लिये कलङ्क हैं और थोड़े बहुत सभी समाजों में रहे हैं और रहेंगे। उनकी बात तो छोड़ दीजिये, उनका तो कोई धर्म ही नहीं। जिधर बहुमत होगा उधर हो जायँगे, किन्तु देखना यह है कि मुसलमानी सभ्यता इस देश में लोकप्रिय होने से बढ़ी या शासन की कठोरता, तलवार के बल पर अथवा प्रलोभन के द्वारा। कहना पड़ेगा भारतीयों ने इसे स्वेच्छा से कभी स्वीकार नहीं किया। यदि हिन्दु समाज उनके अपराधों पर उदारता से विचार करता, उसमें पूर्व की भाँति पाचनशक्ति की प्रचुरता होती, भारत में दो संस्कृतियाँ कभी भी पनपने न पातीं, किन्तु भगवान् की यही इच्छा थी। हमारी एक सभ्यता न रह सकी। बीच-बीच में ऐसे प्रयास हुए इन सबको मिला लिया

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जाय, किन्तु शासन अपने हाथ में न होने से, सामाजिक रूढ़ियों के कारण इसमें सफलता न हुई।

शुद्धि की आवश्यकता का अनुभव

हम पहले ही बता चुके हैं, दिन-दिन हिन्दु समाज का ह्रास होते देखकर समाज के शुभचिन्तकों को व्यग्रता हुई कि यदि इसी तरह हमारे समाज के लोग निकल-निकलकर विधर्मी बढ़ते जायँगे, तब तो समाज का ह्रास ही हो जायगा। मुसलमानों के पश्चात् ईसाइयों ने भी अपने धर्म का प्रचार आरम्भ किया। उन्होंने तलवार के बल पर नहीं प्रलोभन के बल पर अपने धर्म का प्रचार किया। हिन्दुओं को धर्म की बात संसार में कौन सिखा सकता है। हिन्दुओं का सामाजिक सङ्गठन, दार्शनिक ज्ञान ऐसा नपा तुला निर्विवाद है कि उसकी तुलना ये क्षुद्र सम्प्रदाय वाले क्या कर सकते हैं। इसलिये ईसाइयों ने दुखियों की सेवा करके अछूतों के मनमें हिंदुओं की अनुदारता संकीर्णता सिद्ध कर के तथा कामिनी काञ्चन का प्रलोभन देकर कुछ लोगों को ईसाई बनाया। जब उच्च कुल के लोगों को छोड़कर ईसाई वे ही बने जो हिन्दु समाज से तिरस्कृत समझे जाते थे। यद्यपि ऐसे लोग ईसाइयों के प्रचार से नाम मात्र को ईसाई बन गये, किन्तु उनके मनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे हिन्दु समाज के पूर्ववत अङ्ग बने रहे। उनमें मुसलमानों की भाँति सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं हुआ, फिर भी वे हिन्दु समाज से तो पृथक् ही माने जाने लगे। उदार हिन्दु इसका अनुभव करने लगे। बहुत से लोगों ने इस प्रश्न को उठाया। इनमें आर्य समाज के प्रवर्तक श्री स्वामी दयानन्दजी मुख्य थे। आर्य समाज ने मुसलमान और ईसाइयों की शुद्धि का कार्य आरम्भ किया। आर्य समाज की बहुत सी बातें ऐसी थीं, जिन्हें हिन्दु समाज स्वीकार नहीं कर सकता था।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जैसे अवतारों का न मानना, मूर्ति पूजा का खंडन करना, वर्णाश्रम धर्म को केवल गुण कर्म स्वभाव से ही मानना, जन्मना जाति न मानना, इत्यादि-इत्यादि। बङ्गाल के ब्रह्म समाज और थ्योसफिस्ट ये सब भी हिन्दु मुसलमान सबको मिलाते थे, ये लोग वेदों को स्वतः प्रमाण नहीं मानते थे। आर्य समाज ने विधर्मियों की शुद्धि का कार्य आरम्भ तो किया, किन्तु न तो हिन्दु समाज ने उसका साथ दिया और न उन्हें राजाश्रय ही प्राप्त हुआ। इसलिये वह कार्य जैसा होना चाहिये हुआ नहीं। कुछ लोग शुद्ध होकर हिन्दु बने किन्तु समाज ने उन्हें स्वीकार नहीं किया, उनमें से अधिकांश फिर लौट गये। यह बात कट्टर मुसलमानों को बहुत बुरी लगी। उनका अब तक यही विश्वास था कि हिन्दु निकालना ही जानते हैं ये मिलाना अपनाना नहीं जानते। जब उन्होंने देखा हिन्दु तो अब अपनाने भी लगे। कट्टर पंथी मुसलमान मौलवी और पीर जानते थे कि यदि हिन्दुओं ने अपना द्वार विधर्मियों के लिये खोल दिया तो सबके सब मुसलमान तो पुनः हिन्दु हो जायँगे अतः गुण्डों को उभाड़ा गया आर्य समाज के शुद्धि के पक्षपाती नेताओं की निर्मम हत्यायें की गईं। दो चार को छोड़कर आर्य समाज के बड़े-बड़े नेता मुसलमानों के हाथों ही मारे गये। आर्य मुसाफिर लेखकराजजी स्वामी श्रद्धानन्द ये सबके सब शुद्धि की बलिवेदी पर ही निर्दयता के साथ चढ़ाये गये।

काश्मीर के मुसलमान

सुनते हैं काश्मीर में कोई मुसलमान सरदार हिन्दु होना चाहता था। वहाँ के पण्डितों ने उसे हिन्दु नहीं बनाया। उसने प्रार्थना की किन्तु स्वीकार नहीं की। इसलिये उसके मनमें हिंसा जाग्रत हुई, उसने साम, दाम, दण्ड तथा भेद सभी उपायों से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वहाँ के अधिवासियों को मुसलमान बना लिया। कुछ ब्राह्मणों को वह न बना सका। इसीलिये काश्मीर में १०० में ९० मुसलमान हैं १० प्रतिशत जो भी हिन्दु हैं उनमें या तो काश्मीरी पंडित या कुछ पञ्जाबी खत्री हैं। जब वह प्रान्त हिन्दु राजाओं के अधिकार में आ गया, तो वे सबके सब मुसलमान फिर हिन्दु होने को उद्यत हो गये थे। सुनते हैं वहाँ के पण्डितों ने व्यवस्था दे दी ये सब हिन्दु हो सकते हैं। महाराज काश्मीर ने एक पुस्तक भी लिखाई थी। जिसका नाम 'पीयूषगङ्गा' है। वह अब भी कहीं मिलती है। जब काशी के पण्डितों से व्यवस्था माँगी गई, तो उन्होंने नहीं दी। इसलिये वह न हो सकी। यदि उस समय हिन्दु समाज उन सबके साथ उदारता दिखाता, तो आज काश्मीर में एक भी मुसलमान न होता। आज तो विदेशी विधर्मी आततायी लुटेरे काश्मीर की–भूस्वर्ग की–पवित्र भूमि को हड़पने का प्रयास कर रहे हैं, वहाँ के हिन्दुओं को जीवित ही जला रहे हैं, इसकी नौबत न आती।

नव मुसलमान या अधबरिया ठाकुर

हिन्दु समाज सदा मुसलमानों से पृथक् रहा है। इतना पृथक् कि उनकी छाया छूना भी पाप समझा जाता था। सन् २१ में जब देश में स्वराज्य और खिलाफत का आन्दोलन उठा, तब हिन्दु मुसलमान परस्पर में सम्पर्क में आये। तब ये नारे लगने लगे कि हिन्दू मुसलमान सब भाई-भाई हैं। मुसलमानों को अपनी खिलाफत की रक्षा का स्वार्थ था हिन्दू स्वराज्य के लिये लालायित थे। इसीलिये साल दो साल स्वार्थवश ही सही परस्पर में बड़ी मैत्री रही। उन दिनों मैंने भी अलीगढ़ की मस्जिद में जाकर सन्ध्या की और मुसलमानों की ईद के अवसर पर उनके ईदगाह के चबूतरे पर खड़े होकर व्याख्यान दिये। उस समय

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मैंने बुलन्द शहर, अलीगढ़ आदि के गाँवों में राष्ट्रीय आंदोलन के सम्बन्ध में भ्रमण किया। मैंने बहुत से मुसलमानों को देखा कि वे नाममात्र के तो मुसलमान हैं, किन्तु उनके आचार-विचार रहन-सहन, खान-पान, सब हिन्दुओं के समान हैं, वे अब तक गंगा स्नान करते हैं। पंडितों से मुहूर्त पूछते हैं, विवाहों में पंडित पुरोहितों को सीधा देते हैं, दक्षिणा देते हैं। राम कृष्ण को मानते हैं। होली दिवाली आदि त्योहारों को भी मानते हैं और ईद को भी। ऐसे मुसलमान भारत के विभिन्न प्रान्तों में बसे हैं। क्षत्रियों में राजाओं के जैसे १० लड़के हैं, तो सबसे बड़े तो राजकुमार कहलावेंगे उनसे छोटे सब लाल कहलावेंगे। उनके नाम के पहिले लाल लगता है। रियासत जागीर या किसी राजकुमारी के प्रलोभन में पड़कर बहुत से लाल नाम मात्र में तो मुसलमान हो गये थे, वे लाल खानी या अधबरिया ठाकुर कहलाते हैं। बुलंदशहर, अलीगढ़, आगरा आदि पश्चिम के जिलों में ऐसे लालखानी हैं। अब इनके यहाँ विवाहों में पण्डित आते हैं। ब्राह्मणों को सीधे दिये जाते हैं, ज्योतिषियों से मुहूर्त पूछे जाते हैं। रामपुर के नवाब साहब गंगाजल पीते थे। उनके दरबार में दो ज्योतिषी सदा रहते थे। इधर ५-७ वर्ष का तो मुझे पता नहीं, नहीं तो उनके यहाँ राज्य पण्डित राजज्योतिषी सबकी वृत्ति बँधी थी। नवाब साहब प्रत्येक कार्य पञ्चाङ्ग देखकर—ज्योतिषी से मुहूर्त पूछकर करते थे। जो जाट मुसलमान हो गये वे जाट के नाम से जो गूजर मुसलमान हुए वे मूले गूजर के नाम से तगा मुसलमान हुए थे, वे मूले तगा के नाम से और जो संजोगी (संजोगी वह जाति कहलाती है, जिसके पूर्वजों ने साधु संन्यासी होकर फिर गृहस्थी बनकर संतान उत्पन्न की हो। उनमें से जो) मुसलमान बन गये थे, वे मूले संयोगी के नाम से प्रसिद्ध हैं। आगरे के आस-पास मलकाने भी ऐसे ही थे। इन सबको नव मुखलिम

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कहते हैं। हिन्दू समाज इन्हें अपने में मिलाने को तत्पर नहीं था। मुसलमानों में ये हृदय से मिलना नहीं चाहते थे। अतः ये त्रिशंकु की भाँति अधवर में ही लटके हुए थे। ऐसे लाख दो लाख नहीं करोड़ों नवमुसलिम हैं। करोड़ों या लाख दो लाख को छोड़कर सभी मुसलमान ऐसे ही हैं, किन्तु बहुत से मुसलमानों में ऐसे घुल-मिल गये हैं कि उनकी मूल जाति अब ज्ञात नहीं है। इन लोगों ने अपनी मूल जाति बनाये रखी, अपनी-अपनी जाति में इनका व्यवहार भी है। उसी तरह चाचा, ताऊ, मामा, नाना का सम्बन्ध मानते हैं। उनके नाम भी हिंदुओं के जैसे होते हैं केवल पीछे 'खाँ' लगा देते हैं जैसे छिद्दाखाँ, छंटे नन्हें खाँ, गुलाब खाँ आदि-आदि। अपनी पुरानी जाति वालों के बिवाहों में जाते हैं, किंतु रोटी बेटी का संबंध नहीं है। मुसलमान मौलवी इनके यहाँ जाते हैं, नमाज रोजा का प्रचार करते हैं, किंतु उनके सामाजिक आचार-विचार, व्यवहार सब हिंदुओं के जैसे हैं। जब खिलाफत स्वराज्य का आंदोलन उठा, तब इन सबको आशा हुई कि अब हमें हिन्दू समाज अपना लेगा हिन्दू समाज भी अब अपनी नित्यप्रति को क्षय से दुखी था। अतः क्षत्रिय सभा की ओर से एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि जो नव-मुसलिम हिन्दु बनना चाहें उन्हें शुद्ध करके हिन्दु समाज में पुनः मिला लिया जाया। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्दजी के नेतृत्व में एक "भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा" की स्थापना हुई। उस समय मैं काशी में भारत धर्म महामण्डल की मुख्यपत्रिका "निगमागम चन्द्रिका" का सम्पादन करता था। उस समय शुद्धि कार्य में आर्य सामाजियों ने ही नहीं, सनातन धर्म की सभी संस्थाओं ने, सभी पण्डितों ने शुद्धि की व्यवस्था दी, उस समय काशी की भारतीय परिषद्, काशीस्थ विद्वद् परिषद्, भारत धर्म महामण्डल वंगीय ब्राह्मण सभा, काशीस्थ पण्डित सभा, लाहौर सनातन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

धर्म सभा, काश्मीर पण्डित सभा, हिन्दु महासभा, महाराष्ट्र हिन्दु परिषद्, काशी, प्रयाग, वृन्दावन, दक्षिण के पण्डितों ने तथा वैष्णव, सिक्ख तथा अन्यान्य सभी सम्प्रदाय के विद्वानों ने इसका अनुमोदन किया।

मलकानों की शुद्धि

भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा की ओर से १९२० में प्रथम मलकानों की शुद्धि का कार्य आरंभ हुआ। उसी में सभी संप्रदाय के हिन्दुओं ने सहयोग दिया। ३-४ साल में लाख डेढ़ लाख मलकाने शुद्ध करके हिन्दु बनाये गये। इसका मुसलमान मौलवियों ने घोर विरोध किया। मुसलमान अधिकारी इससे चिढ़ गये, सरकार भी उनके अनुकूल थी। राष्ट्रीय सभा ने भी स्पष्ट शब्दों में नहीं तो घुमा फिराकर इस कार्य का विरोध ही किया। इसी कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक मदान्ध मुसलमान ने हत्या कर दी। हिन्दु समाज ने भी शुद्ध हुए मुसलमान के साथ उतनी अधिक उदारता नहीं दिखाई। इन सभी कारणों से इस काम में प्रोत्साहन नहीं मिला। यह कार्य आगे न बढ़ा। प्रतीत होता है वह उसके बढ़ने का समय न रहा होगा।

लालखानियों का प्रस्ताव

उस समय अलीगढ़, बुलंदशहर आदि की कई बड़ी-बड़ी रियासतों के नवाबों ने स्वामी श्रद्धानन्दजी के पास सन्देश भेजा था कि यदि हमें हिन्दु फिर अपनी पुरानी जाति में मिला लें, हमारे साथ जाति बिरादरी का-सा वर्ताव करें, तो, हम सबके सब हिन्दु बनने को तैयार हैं। इस बात को जाति वालों ने स्वीकार नहीं किया इसलिये यह बात फिर आगे न बढ़ी।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दो संस्कृतियों के विकास से हिन्दुत्व को हानि

यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि हिन्दु संस्कृति और मुसलिम संस्कृति परस्पर में विरोधी संस्कृतियाँ हैं। हमारे यहाँ एक कहावत है किसी ने नये मौलवी के लड़के से पूछा—"मुसलमानी धर्म क्या है?" तो नये मौलवी ने उत्तर दिया—"जो हिन्दु करें उसके विपरीत करना ही मुसलिम धर्म है। हिन्दु उत्तर की ओर मुख करें, तो तू दक्षिण की ओर करना। हिन्दु सीधा लिखें तो तू उलटी ओर से लिखना।" इसका अभिप्राय यही निकला कि मुसलिम संस्कृति भारतीय संस्कृति की विरोधिनी है। भारतीय संस्कृति के साथ विदेशी संस्कृतियों के मान लेने से राष्ट्र को कितनी हानि हुई। यदि राष्ट्रीय महासभा पहिले से ही मुसलमानों के विशेषाधिकार को स्वीकार न करती, तो कौन नहीं जानता है यह पाकिस्तान का प्रश्न उठता ही नहीं। किन्तु जो होता है अच्छा ही होता है, भगवान् की इच्छा से ही होता है। दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को स्वीकार करने से यह सिद्ध हो ही गया कि भारत में दो संस्कृतियाँ एक साथ विकसित नहीं हो सकतीं। जिन दिनों देश के बँटवारे की बात चल रही थी, उन दिनों मुसलमानों के अग्रणी स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर रहे थे कि हिन्दु और मुसलमानों की दो संस्कृतियाँ हैं, हम हिंदुओं के साथ किसी प्रकार नहीं रह सकते, इसलिये देश का बँटवारा कर दिया जाय। हिन्दुस्तान पृथक् हो मुसलिमस्थान या पाकिस्तान पृथक् हो। यद्यपि उनकी माँग न्याय सङ्गत नहीं थी। हिन्दुस्थान हिन्दुओं का देश है, तुम्हारा निर्वाह हमारे साथ नहीं होता तो तुर्क अरब या टर्की में चले जाओ। किन्तु हिन्दु निर्बल थे परतंत्र थे। मुसलमानों की पीठ पर विदेशी शासकों का हाथ था। उनकी अनुचित और अव्यावहारिक माँग स्वीकार की गई। वह भी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उन्होंने आतङ्क उत्पन्न करके छुरे भोंक कर हत्या, अपहरण और धार्मिक मदान्धता करके हमसे मनवाली। जिस मुसलिमस्थान या पाकिस्तान को सब अव्यावहारिक विकृत मस्तिष्क की उपज बताते थे जिसे सब असम्भव कहते थे, वह संभव हो गया। देश में दो टुकड़े हो गये। हम यहाँ स्वतंत्रता का महोत्सव मना रहे थे और पंजाब में हिन्दुरक्त की नदियाँ बहाई जा रही थीं हिन्दुओं की निर्मम हत्यायें की जा रही थीं, हमारी बहिन बेटियों का सतीत्व नष्ट किया जा रहा था। पाकिस्तान की भूमि से बीन-बीन कर अमुसलिम भगाये जा रहे थे। उनका एक ही शब्द था—मुसलिमस्थान में रहना चाहते हो तो मुसलमान बनकर रहो। नहीं तो अपना सर्वस्व त्यागकर छुरे और खड्ग के घाट उतरो। कितने अबोध बच्चों की निर्मम हत्यायें की गईं। कितनी युवती लड़कियाँ बलपूर्वक उड़ाई गईं, कितने के गुह्यस्थान काटे गये। यह बातें दुहराने की नहीं। हिन्दुओं के साथ कैसे-कैसे पाशविक अत्याचार किये गये उन्हें लिखने की मेरी इस लोहे की लेखनी में शक्ति नहीं। पञ्जाब से पीड़ित, सर्वस्व गँवाकर किसी प्रकार जान लेकर भागे हुए एक भी शरणार्थी की जिस हिन्दु ने करुण कहानी सुनी होगी, उसका हृदय बिना फटे न रहा होगा। उसकी आँखों में अश्रु न निकले हों यह असम्भव है, किन्तु मेरा ही ऐसा वज्र हृदय है कि एक दो के नहीं, १००-२०० के नहीं, हजारों शरणार्थियों के साथ मैं रहा हूँ। सौभाग्य से या दुर्भाग्य से सहस्र शरणार्थियों की सेवा का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ है। कैसी उनकी करुणाजनक कहानी है। जो बच्चे कल तक पलँगों पर से उतरते नहीं थे, वे आज एक रोटी के टुकड़े के लिये तरस रहे हैं। जिनके अनेकों भृत्य थे वे आज सड़कों पर पैसे-पैसे की मूँगफली बेचते फिरते हैं। जिनके यहाँ बड़े-बड़े सुन्दर दुमञ्जले, चौमञ्जले महल थे, वे आज एक-एक हाथ की भूमि के लिये तरस रहे हैं। उनके

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अङ्गों पर वस्त्र नहीं, पेट में अन्न नहीं। आज वे अनाथों की भाँति द्वार-द्वार भटक रहे हैं। यह सब उनके साथ अन्याय क्यों हुआ। उन्होंने विदेशी विधर्मी संस्कृति के सम्मुख मस्तक नहीं झुकाया। वे चाहते तो मुसलमान बनकर सुख से अपनी जन्म-भूमि में रह सकते थे। किन्तु धर्म की रक्षा के लिये वे सर्वस्व त्यागकर शरण देने वालों के स्थान में शरणार्थी बन गये। मुस-लिमस्थान में एक भी अमुसलिम निरापद नहीं है। वे पल-पल पर शङ्कित बने रहते हैं। कब हमारा सर्वस्व छीन लिया जायगा, कब हम खड्ग के घाट उतार दिये जायँगे। इसके विपरीत मुस-लिमस्थान से शेषखण्ड में जिसे हिन्दुस्थान कहना भी एक प्रकार का अपराध समझा जाता है, यहाँ मुसलमान अस्त्र-शस्त्र का संग्रह कर रहे हैं। भूमि के नीचे सुरंगें बनाकर समस्त भारत पर मुसलिम साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहे हैं। किन्तु हम फिर भी उनको प्रसन्न करने के लिये उनकी अनुनय विनय कर रहे हैं। यह दैव की कैसी बिडम्बना है। दो राष्ट्रों के सिद्धांत को मान कर हमने अपने प्यारे देश के टुकड़े टुकड़े कर दिये। अपने घर में हम विदेशियों की भाँति शङ्कित और भयभीत होकर यातनायें सह रहे हैं। हिन्दु जाति का इससे अधिक पतन क्या होगा। जहाँ हम (हिन्दु) अल्पसंख्या में हैं, वहाँ हमारे कंठों पर दुधारा चल रहा है, हमें शूली की शैया पर अहर्निशि सोना पड़ रहा है और जहाँ हम बहु संख्या में हैं, वहाँ हम अपना संङ्ग-ठन करने से भी रोके जा रहे हैं। इसलिये अब हिन्दु जाति को चेत जाना चाहिये। उसे अब दूर-दूर की नीति का परित्याग कर देना चाहिये, जो प्रेम से हमारे समाज में आना चाहे उसे अवि-लम्ब अपने में मिला लेना चाहिये। यदि अब भी हम भूल कर बैठे, तो हिन्दु सभ्यता—हिन्दु संस्कृति—को बहुत बड़ा आघात पहुँचेगा। हमारा अस्तित्व असम्भव हो जायगा जिन्हें हमने

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पहिले अपने समाज से पृथक् कर दिया है जो विधर्मी बन गये हैं और पुनः अपने धर्म में आना चाहते हैं उन्हें खुले हृदय से अपनाना चाहिये। हिन्दु समाज के अवरुद्ध द्वारों को उनके लिये उन्मुक्त कर देना चाहिये। बिना ऐसा किये हिन्दु समाज की रक्षा कठिन ही नहीं असम्भव है।

क्या धर्म परिवर्तन हो सकता है ?

अब प्रश्न यह उठता है कि धर्म तो अपरिवर्तनशील है धर्म कैसे परिवर्तित हो सकता है ? जाति तो जन्म से होती है। ईसाई या मुसलमान के यहाँ उत्पन्न हुआ व्यक्ति हिन्दु कैसे हो सकता है ? आइये पहिले अत्यन्त संक्षेप में इसी पर विचार करें। यद्यपि धर्म एक अपरिवर्तनशील, शुद्ध और सनातन है। उसमें वृद्धि नहीं, ह्रास नहीं किन्तु व्यवहार में, धर्म, देश, काल और पात्र के अनुसार सदा परिवर्तन हुआ है, होता रहेगा। वर्णधर्म, आश्रमधर्म, मानवधर्म, युगधर्म, आपदधर्मये देश के अनुसार, काल के अनुसार, तथा पात्र के अनुसार बदलते रहते हैं। यद्यपि हमारे यहाँ वर्ण सामान्यतया जन्म से ही माने गये हैं। ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही होगा। उसका जातकर्म संस्कार ब्राह्मणोचित ही कराया जायगा किन्तु कहीं-कहीं गुण कर्म स्वभाव से वर्ण विपर्यय होने का उल्लेख मिलता है। हम देखते हैं विश्वामित्रजी का जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ, किन्तु वे अपने कर्मों के द्वारा—तपस्या के द्वारा—इसी शरीर से क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये। उनके ब्राह्मण होने की कथा को पढ़कर तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि एक वर्ण से दूसरे वर्ण में जाना बहुत कठिन क्या असम्भव है। किन्तु ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो विश्वामित्र सद्भावना से नम्रतापूर्वक ब्राह्मण होना नहीं चाहते थे। ब्राह्मण का तो मुख्य धर्म है क्षमा। क्षमा के द्वारा ही ब्राह्मण पूजनीय

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हुए हैं।* विश्वामित्रजी हठपूर्वक विप्रश्रेष्ठ वसिष्ठजी से लड़कर ब्राह्मण बनना चाहते थे। उन्होंने अपनी तपस्या का दुरुपयोग किया। वसिष्ठजी के पुत्र को मार डाला, बहुतों को चंडाल होने का शाप दिया। त्रिशंकु जो वास्तव में वसिष्ठजी का शिष्य था और अपने खोटे कर्मों से चाण्डाल हो गया था उससे भी—वसिष्ठजी को नीचा दिखाने के लिये—यज्ञ कराया, उसे सशरीर स्वर्ग पहुँचाने की प्रतिज्ञा की। फिर बेचारे की दुर्दशा हुई। पक्षी बनकर सहस्रों वर्षों तक वसिष्ठजी से त्रिशंकु-के पुत्र हरिश्चन्द्र के पीछे स्वयं लड़ते रहे। इन कारणों से उनके ब्राह्मण बनने में इतने बखेड़े हुए। इसलिये बार-बार ब्रह्माजी यही कहते रहे, यदि वसिष्ठजी तुम्हें ब्राह्मण मान लें। तब तुम ब्राह्मण हो सकते हो। अन्त में वसिष्ठजी ब्राह्मण ही ठहरे, उन्होंने मान लिया। फिर विश्वामित्रजी के सब पुत्र ब्राह्मण हुए बहुत से क्षत्रिय हुए और बहुत से शूद्र हुए आज तक कौशिक गोत्र के ब्राह्मण भी हैं, वैश्य भी हैं और म्लेच्छ भी हैं।

ऋषभदेवजी के १०० पुत्र हुए थे। उनमें से भरतजी तो अजनाभवर्ष के राजा हुए। पीछे अजनाभ वर्ष उन्हीं के नाम से भारतखण्ड या भारतवर्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ९ पुत्र नौ खण्ड के राजा हुए। ९ भागवत धर्म के आचरण करने वाले नवयोगेश्वर मुनि हुए और शेष जो ८१ छोटे थे वे पिता की

---

* १. वयं हि ब्राह्मणास्तात क्षमयार्हणतां गताः।
यथा लोकगुरुर्देवः पारमेष्ठ्यमगात् पदम्॥
(श्री० भा० ९ स्क० १५ अ० ३९ श्लो०)

२. त्रैशङ्कवो हरिश्चन्द्रो विश्वामित्रवसिष्ठयोः।
यन्निमित्तमभूद् युद्धं पक्षिणोबहुवार्षिकम्॥
(श्री० भा० ९ स्क० ७ अ० ७ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आज्ञा पालन करने वाले, अतिविनीत, महान और निरन्तर यज्ञयोग में ही लगे रहने वाले थे। वे अपने पुण्यकर्मों के अनुष्ठान करने से विशुद्ध होकर ब्राह्मण बन गये। ●

चन्द्रवंश में जो अजमीढ़ राजा थे उनकी सातवीं पीढ़ी में भर्म्याश्व नामक राजा हुए। उनके पाँच पुत्रों में मुद्गल नाम का एक पुत्र था। वह ब्राह्मण हो गया और उसके वंशज सब मौद्गल्य गोत्र वाले ब्राह्मण हुए। दक्षिण में अब भी मौद्गल्य गोत्री ब्राह्मण विद्यमान है। महामुनि उतथ्य की स्त्री में बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न भरद्वाज क्षत्री हो गये। वे विशुद्ध ब्राह्मण थे, किन्तु मरुद्गणों ने उन्हें लाकर पुत्रहीन महाराज भरत को दिया। जो वितथ के नाम से प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा हुए इन्हीं के करण कौरव पांडव भरतवंशी या भारत कहलाये। ❀

पुरुवंश में महाराज कण्व हुए। उनके पुत्र मेधातिथि हुए।

● एवं कौशिकगोत्रं तु विश्वामित्रैः पृथग्विधम्।
प्रावन्तर मापन्नं तद्धि चैवं प्रकल्पितम्॥
(श्री० भा० ९ स्क० १६ अ० ३७ श्लो०)

● यवीयांश एकाशीतिजायन्तेयाः पितुरादेशकरा महाशालीना महाश्रोत्रिया यज्ञशीलः कर्मविशुद्धा ब्राह्मणा बभूवुः।
(श्री० भा० ५ स्क० ४ अ० १३ श्लो०)

❀ १ मद्गलाद् ब्रह्म निर्वृत्तं गोत्रं मौद्गल्यसंज्ञितम्
(श्री० भा० ९ स्क० २१ अ० ३३ श्लो०)

२ व्यसृजन्मरुतोऽविभ्रन्दत्तोऽयं वितथेऽन्वये
(श्री० भा० ९ स्क० २० अ० ३९ श्लो०)

३ तस्य मेधातिथिस्तस्मात् प्रस्कण्वाद्या द्विजातयः
(श्री० भा० स्क० २० अ० ७ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मेधातिथि के पुत्र प्राकण्व आदि हुए जो ब्राह्मण कहलाये।❀ महाराज ययाति ने अपने पुत्रों में से यदु, तुर्वसु, द्रुह्य और अनु को शाप देकर राज्य का अनधिकारी सिद्ध करके एक प्रकार से बहिष्कृत ही कर दिया था। उनके पुत्र जो पुरु हुए उनके वंश में ब्राह्मण और क्षत्रिय हुए। उनके बहुत से वंशज कर्मणा ब्राह्मण हो गये।

सूर्य वंश के महाराज दिष्ट का पुत्र नाभाग हुआ वह अपने कर्म से वैश्य हो गया। उसके पुत्र चक्रवर्ती महाराज भलन्दन हुए श्रीमद्भागवत में वंशपरम्परा वर्णन करते हुए इतना ही लिखा है। मुझे सन्देह यह था कि कर्म से दिष्ट वैश्य हो गया यह तो संगत भी है किन्तु फिर उनका पुत्र क्षत्रिय कैसे हो गया। हरिवंश में लिखा है नाभाग के दो पुत्र ब्राह्मण हो गये। पुराणों में खोजने पर मार्कण्डेय पुराण में इसकी पूरी कथा मिली। वहाँ बताया है, दिष्ट के पुत्र नाभाग एक सुन्दरी वैश्य कन्या पर आसक्त हो गये थे। कन्या का पिता अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार के साथ करना नहीं चाहता था अन्त में कुमार ने उसके साथ राक्षस विधि से विवाह किया। कन्या

---

४ पूरोर्वंशं प्रवक्ष्यामि यत्र जातोऽसि भारत।
यत्र राजर्षयो वंशया ब्रह्मवंश्याश्च जज्ञिरे॥
(श्री० भा० ९ स्क० २० अ० १ श्लो०)

५ नाभागोदिष्ट पुत्रोऽन्यः कर्मणा वैश्यतां गतः।
भलन्दनः सुतस्तस्य वत्सप्रीतिर्भलन्दनात्॥
(श्री० भा० ९ स्क० २ अ० २३ श्लो०)

❀ नाभागो दिष्टपुत्रश्च क्षत्रिया वैश्यतां गताः। नाभागस्य च पुत्रौद्वौ वैश्यौब्राह्मणतां गतौ।
(हरिवंश अ० १०–११)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

के पिता ने राजा के यहाँ अभियोग चलाया। कुमार ने अपना अपराध स्वीकार किया और पिता से दण्ड देने की प्रार्थना की। पिता ने--बाभ्रव्य मुनि की आज्ञा से कहा—"देखो, यदि तुम पहिले क्षत्रिय कन्या से विवाह करके दूसरा विवाह इस वैश्य कन्या से कर लेते, तो कोई दोष नहीं था। तुमने क्षत्रियों के सदाचार का उल्लंघन किया है अतः तुम क्षत्रियों के अधिकार छोड़कर वैश्य बन जाओ। कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य से अपनी जीविका चलाओ।" पिता की आज्ञा मानकर नाभाग वैश्य बन गया। राजमुकुट त्यागकर वह वैश्यों की सी पगड़ी बाँधने लगा और कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य से अपना निर्वाह करने लगा। उस वैश्य कन्या से उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम भलन्दन था। माता ने उसे जंगल में गौओं के पालन के निमित्त भेजा। किंतु उसकी वैश्य धर्म में रुचि ही नहीं थी। उसने किन्हीं मुनि से अस्त्र विद्या सीखी। सेना एकत्र की और अपने चचेरे भाइयों पर चढ़ाई की, राज्य छीन लिया, राजा बन गया। अपने पिता के पैरों में आकर पड़ा और कहा--"आप राज्य सुख भोगिये।" उसने कहा—"भैया, मैं तो वैश्य हो गया हूँ मैं राजा नहीं बन सकता। तब उस कन्या ने अपने शाप की बात सुनाई और सिद्ध किया मैं तो वैश्य की पालिता कन्या हूँ।" नाभाग ने कहा—"भैया चाहे कुछ भी हो मैंने तो पिता की आज्ञा से वैश्य होना स्वीकार कर लिया है, मैं तो अब वैश्य ही बनकर रहूँगा। तैंने अपने पराक्रम से क्षत्रियत्व प्राप्त किया है, तो राजा बनकर रह। मैं तेरे अधीन रहूँगा और वैश्यों की भाँति तुझे कर दिया करूँगा।" इस प्रकार नाभाग तो वैश्य हुआ, उसका पुत्र भलन्दन क्षत्रिय होकर राजा हुआ और उसके सभी वंशज विशुद्ध क्षत्रिय ही हुए। दो भाई ब्राह्मण हो गये।

यहाँ इन उदाहरणों के देने का अभिप्राय इतना ही है कि

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विशेष अवस्थाओं में वर्णों का भी विपर्यय हो जाता है, जाति भी बदल जाती है। उनका धर्म भी पृथक् हो जाता है।

आश्रमधर्म तो प्रत्यक्ष ही बदलता रहता है। ब्रह्मचारी के दूसरे धर्म हैं, वह कामभाव से कभी स्त्री का स्पर्श भी नहीं कर सकता। उस समय स्त्री से पृथक् रहना ही उसका धर्म है। वही जब व्रत समाप्त करके गृहस्थ हो जाता है, तो ऋतु काल में स्त्रीगमन न करे तो पाप का भागी बनता है। उस समय उसका धर्म दूसरा है। वही जब वानप्रस्थ हो जाता है, तो उसके धर्म पृथक् हो जाते हैं। वन के फलों पर निर्वाह करना, अग्निहोत्र करते रहना यही धर्म है। जब वही संन्यासी हो जाता है, तो अग्नि का स्पर्श न करना ही उसका धर्म है। व्यक्ति एक ही है, अवस्था भेद से उसके धर्माचरण में भेद हो जाता है, जिस आश्रम में वह प्रवेश करता है, उसके धर्म का पालन करना उसे अनिवार्य हो जाता है।

इसी प्रकार प्रत्येक युग का धर्म भी पृथक्-पृथक् है। आदि सत्ययुग में ही एक हंस नामक वर्ण था। प्रणव का रूप ही वेद था* ज्यों-ज्यों आवश्यकता हुई त्यों-त्यों वर्ण आश्रमों का विकास होता गया। चारों वर्णों के धर्म पृथक्-पृथक् निश्चित किये गये। पहिले कोई राजा नहीं होता था, जब समाज ने राजा की आवश्यकता अनुभव की तो मनुजी से राजा होने की प्रार्थना की। वे ही आदि राजा हुए। आदि सत्ययुग में आज

---

* आदौ कृतयुगे वर्णो नृणां हंस इति स्मृतः।
कृतकृत्याः प्रजा जात्या तस्मात्कृतयुगं विदुः॥
वेदः प्रणव एवाग्रे धर्मोऽहं वृषरूपधृक्।
उपासते तपोनिष्ठा हंसं मां मुक्तकिल्विषाः॥
(श्री० भा० ११ स्क० १७ अ० १०, ११, ११ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

की भाँति पुर, ग्राम, तथा नगरों की कल्पना नहीं थी, लोग वृक्षों के नीचे पहाड़ों की कन्दराओं में सुखपूर्वक निवास करते थे। महाराज पृथु के समय से ऐसे सुन्दर व्यवस्था पूर्वक नगर बनने उसका सुन्दर प्रबन्ध होने लगा।* पहिले विवाह की भी ऐसी प्रथा नहीं थीं, सब लोग धर्मात्मा थे उनमें कामभाव की प्रबलता नहीं थी, केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए संगम करते थे। जब उद्दालक मुनि ने किसी ऋषि को काम पीड़ित होकर किसी स्त्री से अनुचित समय में बलपूर्वक अनुचित प्रस्ताव करते देखा तो उन मुनि ने विवाह की मर्यादा बाँध दी।

पहिले किसी युग में पत्नी की ऐसी कठिन मर्यादा नहीं थी। स्त्री चाहती तो दूसरे के यहाँ चली जाती। एक दीर्घतमा नामक ऋषि थे। प्रतीत होता है, वे उस युग के व्यास रहे होंगे। क्योंकि प्रत्येक युग में पृथक् पृथक् व्यास होते हैं और व्यासों की सूची में दीर्घतमा नामक मुनि का भी नाम आता है। उनके कई बच्चे थे, वे अपनी स्त्री का जैसा चाहते थे भरण पोषण नहीं करते थे। उनकी स्त्री ने क्रुद्ध होकर कहा—"भार्या का भरण करने से ही तो पति को भर्ता कहा है। तुम मेरा भरण पोषण नहीं करते, अतः मैं दूसरे स्थान में चली जाऊँगी।" ऋषि सामर्थ्यवान् थे उन्होंने कहा—"चली कैसे जायगी आज से मैं मर्यादा बाँधे देता हूँ कि द्विजों की स्त्रियाँ किसी भी दशा में अपने पति का परित्याग नहीं कर सकतीं।" तब से यह मर्यादा स्थापित हो गई।

---

* प्राक्पृथोरिह नैवेषा पुरग्रामादिकल्पना।
यथासुखं वसन्ति स्म तत्र तत्राकुतोभयाः॥
(श्री०भा० ४ स्क० १८ अ० ३२ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समाज को देखिये सभी वस्तुओं का यथार्थ सार लुप्त हो गया है। जो भगवान् धर्म की ग्लानि होने पर युग-युग में अवतार धारण करके धर्म की स्थापना करते हैं, वे भी आज चुपचाप बैठे सब देख रहे हैं। सब सह रहे हैं। किसलिये ? इसलिये कि यह युग धर्म है कलियुग में ऐसा होता है। जब भी कलियुग आवेगा ऐसा होगा; इसमें दोष किसका है ?* जैसे देश, काल, पात्र और स्थिति के अनुसार वर्ण धर्म में परिवर्तन और परिवर्धन होता रहता है; उसी प्रकार व्यक्तियों के समाज के धर्म में परिवर्तन होता रहता है। घर पर हम रहते हैं, तो हमारे शौचाचार के और नियम हैं, जब हम मार्ग में चलते हैं, पथिक बन जाते हैं, उतने शौचाचार का निर्वाह नहीं कर सकते; उस समय शास्त्र हमें आज्ञा दे देता है 'पथि शुद्रवदा चरेत्' मार्ग में शूद्रों का जैसा भी शौच हो जाय, तो कोई दोष नहीं। ऋषि मुनि तो सर्वज्ञ थे। वे मानव जाति की कठिनाई को समझते थे। इसीलिये हमारे यहाँ आपद् धर्म है। आपत्ति के समय वर्ण की, आश्रम की, शौच की, सदाचार की मर्यादा रखना बड़ा कठिन है। उपनिषद् में एक कथा आती है कि कोई ऋषि अपनी स्त्री के साथ जा रहे थे। अकाल का समय था, कई दिन से उन्हें अन्न खाने को नहीं मिला था, भूख के कारण व्याकुल हो रहे थे, उनके प्राण निकले जाते थे। उसी समय एक हाथी चलाने वाला निम्न जाति का व्यक्ति मिला। उससे उन्होंने कुछ खाने की याचना की। उस हस्तिप ने कहा—"महाराज ! मेरे पास तो आपको देने योग्य

---

* एवं प्रलयतां प्राप्ते वस्तुसारः स्थले स्थले।
अयंतु युगधर्मोहि वर्तते कस्यदूषणम्।
अतस्तु पुण्डरीकाक्षः सहते निकटे स्थितः॥
(पद्म पुराणे० श्रीमद्भागवत माहात्म्ये)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कोई वस्तु नहीं है। ये उबाले हुए उड़द के दाने हैं।" ऋषि ने कहा—"ला, इनको ही दे दे।" उस हस्तिप ने कहा—"महाराज ! ये देने योग्य नहीं है, मेरे जूठे हैं।" मुनि ने कहा—"ला जूठे ही दे दे।" अब विचार क्या करता, उसने जूठे उड़द दे दिये। मुनि ने उन्हें खाया। अन्न पेट में पड़ते ही चैतन्यता हुई, बुद्धि ठिकाने आई। जब वे खा चुके, तो उस हस्तिप ने कहा—"लीजिये महाराज ! जल भी पी लीजिये।" मुनि ने कहा—"भैया ! मैं तेरे हाथ का छुआ जल नहीं पी सकता।" तब तो वह हस्तिप खिल-खिलाकर हँस पड़ा और बोला—"यह अच्छा धर्म रहा। मेरे जूठे उड़दों को तो प्रेमपूर्वक खा गये और शुद्ध पानी में छूत लग गई।" मुनि ने कहा—"धर्म की गति बड़ी सूक्ष्म है उसे तू समझ नहीं सकता। संभव है मेरे प्राण का अन्त हो जाता। अतः प्राणरक्षा के लिये मैंने ये उड़द खा लिये। पानी तो सर्वत्र मिलेगा, चाहे जिस सरोवर, नद, नदी में जाकर पानी पी सकता हूँ। ये उड़द मैंने आपद् धर्म समझकर खा लिये थे।"

इसी प्रकार आपद् धर्म का एक दृष्टान्त महाभारत में महा-मुनि विश्वामित्र के सम्बन्ध में मिलता है। अकाल का समय था, उन्हें बहुत भूख लगी। प्राण निकलना ही चाहते थे, कोई आहार नहीं दिखाई दिया। तब वे घूमते फिरते श्वपच चांडालों की बस्ती में गए। वहाँ उन्होंने एक मरे हुए कुत्ते के दो पिछले पैर लटके देखे, मुनि ने सोचा—"यदि यह मांस मिल जाता, तो इसी से हवन करके मैं अपनी क्षुधा की निवृत्ति करता, किन्तु यह लोभी श्वपच मुझे देगा क्यों। चोरी से इसे लेना चाहिये।" यह सोचकर वे बैठे रहे। जब वह बुड्ढा श्वपच सो गया, तो ये चुराकर उस मरे कुत्ते की टाँग को लेकर भागे। श्वपच जाग पड़ा। अब इन दोनों में जो सम्बाद हुआ है वह पढ़ने योग्य है। उसे पढ़कर आश्चर्य होता है कि कुत्ते का

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पहिले सुरापान के लिये ऐसे कोई कड़े नियम नहीं थे। उसकी बुराई के प्रति लोगों का ध्यान नहीं था। शुक्राचार्य को जब असुरों ने उनके प्रिय शिष्य कच को मारकर उसको जला कर उसकी राख सुरा में मिलाकर उन्हें पिला दी, तब उन्होंने मर्यादा स्थापित कर दी "जो द्विज आज से सुरापान करेगा, उसे ब्रह्महत्या के समान पाप लगेगा और इह लोक तथा परलोक में उसकी निन्दा होगी।"❀ तभी से सुरापान की गणना महापापों में होने लगी।

यह तो निर्विवाद बात है कि पहिले युगों में अश्वमेध, गोमेध आदि यज्ञ होते थे; उनमें हिंसा भी होती थी और ऐसी वैदिक कर्मकांड वाली हिंसा, हिंसा नहीं मानी जाती थी❀ आवश्यकता होने पर स्त्रियाँ देवरों से सन्तान उत्पत्ति भी कराती थीं, ब्राह्मण लोग गृहस्थ के पश्चात् वानप्रस्थ होते थे और वानप्रस्थ होने के अनन्तर संन्यास भी धारण करते थे। कोई-कोई तो ब्रह्मचर्याश्रम या गृहस्थाश्रम से ही सीधे संन्यासी हो जाते थे। मांस से श्राद्ध करने की भी प्रथा थी।

❀ यो ब्राह्मणोऽद्य प्रभृतीह कश्चिन्मोहात् सुरां पास्यति मन्दबुद्धिः।
अपेतधर्मा ब्रह्मणा चैव स स्यादस्मिल्लोके गर्हितः स्यात्परे च॥
मयाचेतां विप्रधर्मोक्तिसीमां मर्यादां वै स्थापितां सर्वलोके।
सन्तो विप्राः शुश्रुवांसो गुरूणां देवा लोकाश्चो श्रृण्वन्तु सर्वे॥
(महा० आ० पा० ७७ अ० ६७, ६८ श्लो०)

❀ वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।
अश्वालम्बं गवालम्बं संन्यासं पलपैत्रिकम्।
देवरात्सुतोत्पत्तिः कलौपञ्चविवर्जितम्।
(निर्णयसिन्धुः)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अन्य युगों में ये धर्म समझे जाते थे, किन्तु कलियुग में पाँचों वर्जित माने गये हैं। कलिकाल में कोई अश्वमेध या गोमेध का आग्रह करता है, तो वह धर्म न करके अधर्म करता है। संन्यास जैसे पवित्र और त्यागमय धर्म का भी कलियुग में निषेध है। निषेध इसलिये नहीं है कि यह कोई पाप है ऋषि मुनि तो दूरदर्शी थे, वे जानते थे कलियुग में इनका निर्वाह होना अत्यंत ही कठिन है। कलियुग में लोगों की सामाजिक परिस्थिति, मनोवृत्ति ऐसी हो जायगी कि इनका त्यागमय धर्मों का पालन करना अत्यन्त ही कठिन हो जायगा, अतः कलियुग में संन्यास, वानप्रस्थ तथा चिरब्रह्मचर्य अर्थात् नैष्ठिक ब्रह्मचर्य ये सब वर्जित हैं। कहीं-कहीं इसके अनन्तर ऐसे भी वचन मिलते हैं कि जब तक वर्णाश्रम धर्म रहे, तब तक कलियुग में भी संन्यास ले सकते हैं, उन्हीं वचनों के अनुसार आजकल संन्यास लिया जाता है, किन्तु यह तो अपवाद ही है। जो नैष्ठिक ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास, परम धर्म समझे जाते थे, वे युग के अनुसार निषेध किये गये। इसी प्रकार वर्णों में भी विपर्यय हो गया। चिल्लाते तो हैं 'वर्णाश्रम धर्म, वर्णाश्रम धर्म' किन्तु हम हृदय पर हाथ रखकर देखें क्या हम वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हैं? आज कितने गृहस्थी अग्निहोत्र करते हैं? पहिले विवाह, दार ग्रहण का एकमात्र उद्देश्य अग्निहोत्र की अग्नि की रक्षा ही करना था। जो गृहस्थ तीन दिन भी अग्निहोत्र सन्ध्या न करता, वह गृहस्थ धर्म से च्युत हो जाता। आज ढूँढ़ने पर भी हमें अग्निहोत्री नहीं मिलते। इसका अर्थ यह तो नहीं है कि अग्निहोत्र बुरी वस्तु है, उसे कलियुग में छोड़ ही देना चाहिये। जो निर्वाह कर सकें, करें; किन्तु देश काल की परिस्थिति ऐसी हो गई है कि इन धार्मिक कृत्यों का निर्वाह हो नहीं पाता। कलियुग में वर्ण को देखिये, आश्रम को देखिये,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अनुसार होती है। सत्ययुग आदि में जो वैभवशाली पुरुष के लिये परमधर्म समझे जाते थे उन्हीं का ऋषियों ने कलियुग में निषेध कर दिया है, क्योंकि वे मुनि दूरदर्शी थे। वे जानते थे तमसे आवृत्त कलियुगी लोग इनका दुरुपयोग करेंगे।

हमारे यहाँ तो पग-पग पर देश काल का विचार किया जाता है।✽ ज्योतिषशास्त्र में तो यही विचार है। यह समय शुभ नहीं यह अशुभ है। भोजन में भी समय के अनुसार परिवर्तन होता है, जाड़े में दूसरा भोजन, गरमी में उसमें भिन्नता होती है। देश के अनुसार भी भोजन बदलता है। मैं जब कैलाश मानसरोवर गया था, तब मैंने तिब्बत की यात्रा की थी। वहाँ देखा मांस के अतिरिक्त जीवन निर्वाह की दूसरी वस्तु ही नहीं, तो वहाँ मांस खाना अधर्म नहीं। हमने वहाँ घृत लिया तो चमड़े में बँधा हुआ मिला। जैसे हमारे यहाँ वस्तुएँ कागज या पत्ते में देते हैं, वैसे वहाँ प्रत्येक वस्तुएँ चमड़े में रखकर देते हैं। अब क्या करते हमारे यहाँ कहावत भी है 'जैसा देश वैसा वेष'। शास्त्रकारों ने देशाचार को भी प्रमाण माना है। समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिये सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन परिवर्धन सदा हुआ है, हो रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। इस प्रकार हम देखते हैं देश, काल, पात्र आपत्ति विपत्ति के अनुसार नियमों में सदाचार में परिवर्तन करने की प्राचीन प्रथा है, तो आज से बढ़कर हमारे लिये विपत्ति का समय कौन-सा होगा।

✽ स एव धर्मः सोऽधर्मो देशकालेप्रतिष्ठितः। आदानमपनृतं हिंसा धर्मो ह्यवस्थिकः स्मृत स एव धर्मः सोऽधर्मस्तंतं प्रतिनरं भवेत्। पात्रकर्मविशेषेण देशकालाववेक्ष्य च। अन्यो धर्मः समस्थस्य विषमस्थय चाऽपरः एतानि लोकगुह्यर्थं कलेरादौ महात्मभिः निर्वर्तितानि कर्माणि व्यवस्थापूर्वकं बुधैः॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आज भी हिन्दु समाज अपने पिछड़े हुए बन्धुओं के लिये अपने सभी द्वारों को बन्द रखेगा, तो उसका अस्तित्व असंभव हो जायगा। पहिले हम सबको अपनी संस्कृति में मिलाकर भारतीय बना लेते थे, किन्तु जब से हम अपने में से निकाल तो देते हैं किन्तु फिर कोई आना चाहे वो उसके लिये कोई मार्ग नहीं, हमारे सब द्वार बन्द हैं, तब से हिन्दु समाज प्रतिदिन घट रहा है। हमारे लोग ही हमारी दुर्बलता से हमसे पृथक् हो रहे हैं। वे अपने को हिन्दु कहने में लजाते हैं। सिक्ख हमारे ही भाई हैं, हिन्दु समाज के ही एक अङ्ग हैं। उनके १० गुरु इमसे ही थे। हिन्दु धर्म की रक्षा के ही लिये सिक्ख धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। आज उनमें से कुछ लोग अपने को हिन्दु समाज से पृथक् घोषित करके अपने अधिकार पृथक् प्राप्त करना चाहते हैं। यदि हमारा समाज सबल होता तो वे गौरव के साथ अपने को हिन्दु कहते, कहते क्या वे तो हैं ही हिन्दु।

हिन्दु धर्म क्या है ?

अब प्रश्न यह है कि हिन्दु की व्याख्या क्या है ? हिन्दु किसे कहें ? इस प्रश्न की कोई निर्विवाद व्याख्या आज तक नहीं हुई है और न होनी ही उत्तम है। यदि कोई एक व्याख्या हो जायगी तो हिन्दु धर्म एक सार्वभौमिक धर्म न रहकर ईसाई मुसलमानों की भाँति एक सम्प्रदाय बन जायगा। हिन्दु धर्म सम्प्रदाय नहीं वह मानव धर्म है हमारे यहाँ धर्म शब्द बड़ा ही व्यापक है। उसके भावों को द्योतन कराने वाला किसी भाषा में दूसरा शब्द नहीं, कहीं तो धारणा से धर्म माना है, कहीं १० लक्षण वाला धर्म माना है, अविरोधी सिद्धान्त को धर्म कहा है, कहीं मनसा वाचा कर्मणा सबके हित में रत हो, सबका सुहृद् हो, वह धर्म है। कहीं वेद, स्मृति सदाचार और अपनी आत्मा से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मांस खाने वाला श्वपच चांडाल धर्म का इतना भारी पण्डित था, उसने धर्मशास्त्रों के दृष्टान्त दे देकर विश्वामित्रजी के इस कार्य की घोर निन्दा की। विश्वामित्रजी ने उसकी सब बातों को काट दिया और उसकी खिल्लियाँ उड़ाते हुए कहा—"अरे, तू कुत्ते का मांस खाने वाला चांडाल धर्म के रहस्य को क्या जान सकता है ? धर्म के गर्भ को तो मैं जानता हूँ, मेरा नाम विश्वामित्र है। यदि मैं आज किसी प्रकार अपने प्राणों की रक्षा कर लूँगा तो प्रायश्चित्त करके धर्माचरण तो और भी कर सकता हूँ।" सम्वाद बहुत बड़ा है। सारांश इतना ही है कि विश्वामित्रजी ने उस श्वपच की धर्मयुक्त बातों में से एक को भी नहीं माना, वे उस मरे कुत्ते की टाँगों को चुराकर बलपूर्वक ले ही गये।* अन्त में उसे उन्होंने खाया नहीं। यह तो देवताओं की परीक्षा थी, किन्तु उन्होंने आपद्धर्म का महत्व बताया।

धर्म तो अपरिवर्तनशील है। वह तो कभी बदलता नहीं। किन्तु नियमों में देश काल की स्थिति के अनुसार सदा परिवर्तन होता आया है। कहीं पानी बह रहा है, थोड़ा पानी है, ऐसी सम्भावना है कि इस पानी का स्रोत बन्द हो जायगा, तो पानी का अभाव हो जायगा। बुद्धिमान लोग जल की रक्षा के लिये उसे चारों ओर से बाँध देते हैं कि जल बहने न पावे। प्रचुर मात्रा में जल एकत्रित हो जाता है। एकत्र हुआ जल यदि निकाला न जायगा, तो उसमें गन्दगी होनी आवश्यक है। अब हम इस लोभ से जल को न निकालें कि हमारे पूर्वजों ने इसे बाँधा तो वह जल सड़कर सभी को रोगी बना देगा। जल में तो

---

* क्षुधार्तश्चत्तुमभ्यागाद् विश्वामित्रः श्वजाघनीम्।
चांडालहस्तादादाय धर्माधर्मविचक्षणः॥
(मनु)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आदान-प्रदान होता रहे तभी वह निर्मल और स्वच्छ बना रह सकता है। इसलिये व्यासजी का वचन है धर्म की स्थिति देश-काल के ऊपर अवस्थित है। जो आज धर्म है दूसरे समय अधर्म है, जो एक देश में धर्म है वह दूसरे देश में अधर्म है। ऋतुमती स्त्री का स्पर्श करना अधर्म है। वही जब चौथे पाँचवें दिन ऋतुस्नान कर चुके उसे न छूना अधर्म है। हमारे इस ब्रह्मावर्त देश में मामा की लड़की, बूआ की लड़की बहिन मानी जाती है। उससे कोई विवाह कर ले तो हम तुरन्त उसे जाति च्युत कर दें। दक्षिण में मामा की लड़की पर बूआ के लड़के का वैधानिक स्वत्व है। जब तक मामा की लड़की मिलेगी तब तक दूसरी लड़की से विवाह नहीं करते। मामा फूफी की लड़कियाँ तो लेते ही मैंने अपनी आँखों से देखा है। सगी बहिन की लड़की (भानजी) से विवाह करने की वहाँ समाजिक प्रथा है। एक कोई करे तो उसे दोष भी दें। वहाँ के समाज ने इसे स्वीकार कर लिया है उनके लिये यह देशधर्म बन गया है। इसलिये सम्पत्काल का धर्म दूसरा है आपत्काल का दूसरा। यदि धनी है और वह फटे मैले वस्त्र पहनता है, तो वह अधर्म है; यदि निर्धन है तो उसके लिये यह धर्म है। इसी प्रकार पदार्थों की शुद्धि, अशुद्धि, द्रव्य, वचन, संस्कार, काल, महत्व, अथवा अल्पत्व से होती है। इसी प्रकार अपनी-अपनी शक्ति अशक्ति बुद्धि और वैभव के अनुसार आत्मा के लिये जो अघ अर्थात् पाप की प्राप्ति होती है।* वह भी देश और अवस्था के

---

* द्रव्यस्य शुद्धयशुद्धीच द्रव्येण वचनेन च।
संस्कारेणाथ कालेन महत्वाल्पतयाथवा ॥
शक्त्याशक्त्याघवाबुबुध्या समृध्या च यदात्मने।
अघं कुर्वन्ति हि यथा देशावस्थानुसारतः ॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इसके विपरीत मुसलमानों की संस्कृति भिन्न है, उनका लक्ष्य अभारतीय है, उनके सामाजिक व्यवहार, रहन, सहन, वेष, भूषा, भाषा ये सब अभारतीय हैं। यद्यपि हमारे देश के अधिकांश हिन्दु मुसलमान बने लोगों ने उस संस्कृति को हृदय से स्वीकार नहीं किया है। फिर भी उन्हें शिक्षा दी गई। वे आँख मूंदकर समाज के पीछे चलते हैं। उन्हें अपने समाज की सभी भला बुरी बातों को मानना पड़ता है। मुसलिम नेताओं की हाँ में हाँ मिलाना पड़ता है। कुछ स्वार्थी लोग धर्म की दुहाई देकर उन्हें उल्लू बनाकर अपना स्वार्थ साधते हैं। उसी का यह परिणाम हुआ कि आज मुसलमान हिन्दुओं के रक्त के प्यासे बन गये हैं। वे हिन्दुओं का बीज नाश कर देना चाहते हैं। वे स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हैं, 'भारत के ४० करोड़ स्त्री पुरुष जब तक मुसलमान न हो जायँगे तब तक हम चैन न लेंगे। हमारा आन्दोलन समाप्त न होगा।' वे मुँह से नहीं कहते, करके दिखा रहे हैं। पञ्जाब से छीन-छीनकर हिन्दु भगा दिये। लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया। अरबों, खरबों की सम्पत्ति छीन ली। लाखों परिवारों को घर-द्वार विहीन बना दिया। इन बेचारों का यही अपराध था कि ये विदेशी संस्कृति को नहीं मानते थे। ये भारत में भारतीय होकर रहना चाहते थे। नौआखाली, पञ्जाब तथा पाकिस्तानी अन्य प्रान्तों में किस प्रकार हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया। केवल इसी कारण से कि वे हिन्दु हैं। कैसी-कैसी दुर्दशा की गई, इसे प्रायः सभी समाचार पत्र पढ़ने वाले सज्जन जानते होंगे। अभी तक लाखों स्त्री पुरुष मुसलमान बने हुए हैं। उन्हें हमें फिर से अपने धर्म में लाना है। फिर से उन्हें हिन्दु बनाना है। इसके बिना समाज का त्राण नहीं, उद्धार नहीं, उन्नति नहीं, अस्तित्व नहीं। इसलिये अब हमें हिन्दु समाज के रुद्ध द्वारों को खोल देना चाहिये, जो फिर से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हिन्दु समाज में सम्मिलित होने को उत्सुक हो, उसे सहर्ष अपनाना चाहिये। उन्हें पुनः हिन्दु बना लेना चाहिये।

शुद्धि की आवश्यकता

आज हिन्दु जाति पर हिन्दु संस्कृति पर पग-पग पर प्रहार हो रहे हैं। आज भी हम दूर-दूर की नीति को बरतेंगे, आज भी हम पिछड़े हुओं को न अपनावेंगे, आज भी हम बलपूर्वक विधर्मी बनाये जाने वालों को समाज में न मिलावेंगे, आज भी यदि समाज से छलपूर्वक निकाले हुओं को हृदय से न चिपटावेंगे, तो एक दिन हम सबको ये ही दिन देखने पड़ेंगे। विधर्मियों के हौसले बढ़ जायँगे। उनके हौसले बढ़े ही हुए हैं, वे जानते हैं जिस स्त्री को एक बार किसी प्रकार हमने फंदे में फँसा लिया फिर उसे हिन्दु समाज किसी प्रकार न लेगा। आज हमें स्मृतियों को खोजना चाहिये। इधर २-४-१० वर्ष में जो बलपूर्वक विधर्मी बनाये गये हैं, उन्हें समाज को बिना किसी संकोच के अपनी जाति में मिला लेना चाहिये।* बलपूर्वक परिवर्तन किया जाता है, वह माना ही नहीं जाता, ऐसी शास्त्र की आज्ञा है, '२० वर्ष तक जो विधर्मी हो गया हो उसे प्रायश्चित् करके मिला लेना चाहिये' ऐसे भी प्रामाणिक वचन हैं।

बङ्गाल में पञ्जाब में, हिन्दुस्तान पाकिस्तान के लिये कैसा विप्लव हुआ। उसमें बहुत से भाई अपना सर्वस्व छोड़कर जैसे तैसे अपनी जान बचाकर भाग आये। जो नहीं भाग सके वे आततायी गुण्डों के फन्दे में फँस गये और उनके सामने

---

* गृहीतो यो बलान्म्लेच्छैः पञ्चषट् सप्त वा समाः दशादिविंशति यावंत्तस्य शुद्धिर्विधीयते।

(अष्टादश स्मृति २२, ५३)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

निर्णीत मत ही धर्म है। कहीं महाजनों के पथ को ही धर्म बताया है। सारांश यह कि हमारे यहाँ तो धर्म की एक ही व्याख्या नहीं। हम कहें कि वर्णाश्रम धर्म को मानने वाला ही हिन्दु है, तो हिन्दुओं में ही ऐसे बहुत से वर्ग हैं जो वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानते। हम कहें कि जो वेद शास्त्रों को माने, वही हिन्दु है; तो जैन, लिंगायत तथा और भी ऐसे सम्प्रदाय हैं, जो वेदों को प्रामाण्य नहीं मानते। यदि यह कहें जो अवतार माने वही हिन्दु है, तो बहुत से सम्प्रदाय अवतारों का खण्डन करते हैं। यदि यह कहें कि चोटी रखाने वाला हिन्दु है, तो हममें बहुत से ऐसे हैं जो चोटी नहीं रखते और हिन्दु हैं। अतः हमारे मत में तो वही हिन्दु है जो भारतीय संस्कृति को माने। अब संस्कृति क्या ? तो यह संस्कृति शब्द भी बड़ा व्यापक है। रहन-सहन, भाषा, वेष, परम्परागत आचार तथा देश की विचारधारा देशीयता, ये सब संस्कृति के अन्तर्गत हैं। जो भारत की सभ्यता, भारतीय धर्म, भारतीय समाज, आचार विचार को मानकर

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयति प्रजाः।
यः स्याद् धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।
प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
यः स्याद् प्रभवसंयुक्तः स धर्म इति निश्चय॥
अहिंसार्थाय भूतानां धर्मं प्रवचनं कृतम्।
यः स्यादहिंसासंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥
बहून् यो बाधते धर्मः न स धर्मः कुधर्म तत्।
अविरोधीतु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रम॥
लोकयात्रार्थमेवेह धर्मस्य नियमः कृतः।
उभयत्र सुखोदकः इह चैव परत्र च॥

(महाभारते)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसी के अनुसार आचरण करने की चेष्टा करें, वे भारतीय हैं, हिन्दु हैं। सर्वप्रथम तो उन्हें इस बात का गौरव होना चाहिये कि भारत हमारी जन्मभूमि है, हमारे पूर्वज यहीं के थे। भारतीय महापुरुषों के लिये उनके मन में अत्यधिक आदर होना चाहिये। भारत का सदाचार है, गौ की सर्व प्रकार से रक्षा की जाय। इसलिये भारतीय के लिये अनिवार्य है कि वह किसी दशा में गौ मांस न खाय। भारतीय को भारत की भाषायें ही अपनानी चाहिये। विदेशी भाषा की जानकारी भले हीं करे, किन्तु मोह अपनी निजी भाषा से ही करना चाहिये। भारतीय समाज की परम्परा के अनुसार, त्यौहार, पर्व, महोत्सव मनाना चाहिये। ये ही सब बातें भारतीय संस्कृति में आती हैं। जैनी यद्यपि हमारी भाँति न ईश्वर को मानते हैं, न हमारे वेद शास्त्रों और अवतारों को ही मानते हैं, किन्तु वे हमारी भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत हैं, अतः वे हमारे समाज में हैं, उनसे रोटी बेटी का सम्बन्ध है, वे हिन्दु हैं।

हमने ऐसा सुना है कि जब पारसी इस देश में आये तो उन्होंने भारत की शरण चाही। वे किसी गुजराती राजा के शासन काल में आये थे। राजा ने कहा—"देखो तुम हमारी भाषा को स्वीकार कर लो और गो रक्षा की प्रतिज्ञा करो। तब हमारे देश में रह सकते हो। धर्म चाहे तुम अपना ही मानो।" उन्होंने यह बातें स्वीकार कर लीं। मानो उन्होंने भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत रहना स्वीकार कर लिया। उनसे हमारा कोई विरोध नहीं हुआ। वे हमारे समाज में एक प्रकार से घुल मिल से गये। काशी में जब महामना मालवीयजी और स्वामी श्रद्धानन्दजी के उद्योग से हिन्दु सभा का विराट् अधिवेशन हुआ था तब एक पारसी सज्जन पारसीयों के प्रतिनिधि होकर आये थे वे अपने को हिन्दु बताते थे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इस प्रकार हम देखते हैं शास्त्रों में सर्वत्र इसी प्रकार के विधान हैं। पञ्जाब से आये शरणार्थियों में मैंने देखा—युवती लड़कियाँ बहुत ही कम हैं। बहुतों ने बताया कि हमारी युवती लड़कियों को मुसलमान बलपूर्वक उठा ले गये। उन लड़कियों की क्या दशा हो रही होगी। नोआखाली से भी बहुत-सी लड़कियाँ देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में बलपूर्वक भेजी गई हैं, जो अब तक मछली की भाँति तड़प रही होंगी। उन्हें जो पता लगाकर अपने माता-पिता से मिला देगा उन्हें कितना पुण्य होगा। वे सोच रही होंगी-अब हमें समाज अपने में क्यों मिलावेगा, किन्तु अब समाज को इस घोर विपत्ति के समय उदारता दिखानी चाहिये नहीं तो हम कहीं के भी न रहेंगे।

जो विधर्मी हिन्दु बनना चाहे उसे बना लिया जाय

ये बातें उनके लिये हैं जो अभी २-४ वर्ष में बलपूर्वक विधर्मी बना लिये गये हैं, उन्हें तो समाज में, जाति-पाँति में मिला लेने में किसी को आपत्ति करनी ही न चाहिये, किन्तु जो हजार पाँच सौ वर्ष पहिले हिन्दु से मुसलमान, ईसाई बने हैं, वे भी यदि आना चाहें, तो उनके लिये भी हिन्दुओं को अपने कपाट खोल देने चाहिये। क्योंकि मूल में तो सब हिन्दु थे ही और प्राचीन काल में हमारे यहाँ का सदाचार भी ऐसा रहा है। जितने आचार्य हुए हैं उन्होंने बहुत से म्लेच्छ यवनों को वैष्णवी दीक्षा देकर हिन्दु बनाया। इतिहासकारों ने लिखा है ये जो गौड़ीय सम्प्रदाय के आचार्य रूप सनातन हैं ये गौड़ देश के मुसलमान राजा के मन्त्री थे और मुसलमान बन गये थे, उन्हें महाप्रभु चैतन्यदेव ने शुद्ध करके वैष्णव बनाया था। मैंने इस सम्प्रदाय के ग्रन्थों को बड़े मनोयोग से पढ़ा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

है, उनमें यह बात कहीं स्पष्ट तो लिखी नहीं, किन्तु इतना स्थान-स्थान पर लिखा है, इसके आचार-विचार खानपान सब मुसलमानों के-से हो गये थे। श्रीसनातनजी जब पुरी जाते, तब हरिदासजी (जो जन्म के ही मुसलमान थे फिर वैष्णव बन गये थे) उनके पास ठहरे थे, इन सब बातों से यही प्रतीत होता है कि उनका आचार-विचार सब मुसलमानों का-सा ही हो गया था। पीछे वे शुद्ध होकर आचार्य ही हो गये। भविष्य-पुराण में कई आचार्यों के सम्बन्ध में आता है कि उन्होंने मुसलमानों को शुद्ध करके उनके कण्ठ में माला पहिनाई और उर्ध्वपुण्ड्र धारण कराया।❀ यही नहीं, मिश्र देश में जाकर कण्व ऋषि ने दश सहस्र म्लेच्छों को शुद्ध करके वर्णाश्रमी हिन्दु बनाया ऐसा भी भविष्यपुराण में उल्लेख मिलता है।×

वैष्णव धर्म ने जितनी उदारता दिखाई है उतनी स्यात् ही किसी धर्म ने दिखाई हो। भगवान् के नाम संकीर्तन से ही

❀ रामानन्दस्य शिष्यो वै चायोध्यामुपागतः।
कृत्वा विलोमं वं मन्त्रं वैष्णवांस्तानकारयत् ॥
भाले त्रिशूलं चिन्हं च श्वेतरक्तं तदाभवत्।
कण्ठे च तुलसी माला जिह्वा राममयी कृता ॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावतः।
आर्यश्च वैष्णवा मुख्या अयोध्यायां बभुविरे ॥
विष्णु स्वामी हरद्वारे जपामस्द्गणैर्वृतः।
तत्र स्थितं महामन्त्रं विलोमंतच्चकारह ॥
(भविष्य० पु० खं० अ० २१, श्लो० ५५, ५६, ५७, ६२)

× कण्वो सरस्वत्याज्ञया मिश्रदेशमुपाययौ।
म्लेच्छान् संस्कृत्य चाभाष्य तदादशसहस्रकान् ॥
(भवि० पु० प्र० स० ४ खं० २१ अ० १६ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दो ही बातें थीं—या तो अभी मुसलमान बनो, नहीं अभी सिर धड़ से पृथक् किया जाता है। उस समय बहुतों ने तो सिर देकर वीर गति पाई। किन्तु जिन्होंने ऊपर से मुसलमान बनकर अपने देह की रक्षा की उन्होंने कोई पाप नहीं किया। वे मुसलमान बने ही नहीं, उन्हें मिला लेने की स्मृतियों में स्पष्ट आज्ञा है। पंजाब में ऐसी घटनाएँ हुई हैं, हिन्दुओं को बलपूर्वक गोमांस खिलाया गया है, उनसे कलमा पढ़वाया गया है, मुसलमानियों के साथ विवाह कर दिया है, ऐसे लोगों को पुनः शुद्ध करके मिला लेने की देवलस्मृति में आज्ञा है, विधान है।*

जो स्त्रियाँ बलपूर्वक हर ली गयी हैं, जिनका दुष्ट पिशाच आततायियों ने बुरी तरह सतीत्व नष्ट किया है जिन्हें अभी तक उनकी इच्छा के विरुद्ध दुष्टों ने अपने घर में रख लिया है,

---

* देशभङ्गप्रवासे च व्याधिषु व्यसनेष्वपि।
रक्षेदेव स्वदेहादिपश्चाद्धर्मं समाचरेत्॥
(पराशर स्मृ० ७।४१)

बलाद्दासी कृता येन म्लेच्छचाण्डालदस्युभिः।
अशुभंकारितं कर्म गवादिप्राणिहिंसनम्॥
उच्छिष्टमार्जनं चैव तथा तस्यैव भोजनम्।
खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्य च भक्षणम्॥
तत् स्त्रीणां तथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम्।
मासोषिते द्विजातौ तु प्राजापत्यं विशोधनम्॥
(देवल० स्मृति० १७, १८, १९)

म्लेच्छैर्हृतानां चौरैर्वा कान्तारेषु प्रवासिनाम्।
भुक्त्वाभक्ष्यमभक्ष्यं वा क्षुधार्तेन भयेनवा॥
पुनः प्राप्य स्वकं देशं चातुर्वर्ण्यस्यनिष्कृतिः।
कृच्छ्रमेकं चरेद्विप्रस्तदर्धं क्षत्रपश्चरेत्॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इच्छा न रहने पर भी जिनके गर्भ रह गये हैं, उनका क्या अपराध है। मेरे यहाँ जो सहस्रों शरणार्थी आये हैं, उन्होंने स्त्रियों की वीरता की कहानियाँ सुनाई हैं। कैसे स्त्रियों ने अपने भाइयों और पतियों से कहकर सतीत्व रक्षा के लिये अपना सिर काट लिया है। एक गाँव को जब आततायियों ने चारों ओर से घेर लिया तो उस गाँव की स्त्रियाँ अपने सतीत्व की रक्षा के लिये कुएँ में कूद पड़ीं। अपने छोटे-छोटे बच्चों को लिए वे सबकी सब कुएँ में कूद रही थीं। कूआं भर गया जो स्त्रियाँ न कूद सकीं उनमें से बूढ़ियों को मार दिया गया। युवतियों को दुष्ट पकड़ ले गये। वे अभी तक यवनों के अधिकार में हैं। हमारी सरकार को पूर्ण शक्ति लगाकर ऐसी स्त्रियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर लाना चाहिये। तभी सरकार की प्रतिष्ठा है तभी वह काल प्रिय सरकार हो सकती है। विद्वानों को शास्त्रीय प्रमाण देकर उन्हें बिना संकोच के समाज में जैसी वे थी वैसी ही साधारण प्रायश्चित्त कराके गङ्गाजल पञ्चामृत पिलाकर शुद्ध कर जाति में मिला लेना चाहिये। दक्षिण में ऐसी शुद्धियाँ अब तक होती हैं। घृत कुल्या कराकर वहाँ ऐसी शुद्धि बहुत होती हैं। बलपूर्वक जिनका सतीत्व नष्ट किया गया है या गर्भ धारण कर दिया है वे रजोदर्शन के पश्चात् या गर्भ से मुक्त होने पर पुनः विशुद्ध बन जाती हैं।*

---

* योषा बिभर्ति या गर्भं म्लेच्छात् कामादकामतः।
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या तथा वेर्णंतराऽपि च॥
अभक्ष्यं भाक्षितं चापि तस्याः शुद्धिः कथं भवेत।
कृच्छ्रं सान्तपनं शुद्धघृतैर्योनिविपाचनम्॥
विनिस्मृतेः ततः शल्य रजसो वामि दर्शने।
तदा सा शुध्यते नारी विमलं कांचनं यथा॥
(देव० स्मृ० ५१)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कितना भी बड़े से बड़ा पापी हो, शुद्ध हो जाता है।[१] यही नहीं, वैष्णवी दीक्षा धारण कर लेने से मनुष्य मात्र द्विज हो जाता है।[२] जहाँ उसने भगवदाश्रय भक्त का आश्रय ग्रहण किया, वहाँ यह पूज्य बन जाता है। इन्हीं सब वचनों के आधार पर तो सर्वशास्त्र निष्णात वैष्णवाचार्य श्रीअद्वैताचार्य ने हरिदासजी को जो जन्म-जात यवन थे श्रद्धान्न दिया था। भगवद्भक्ति के माहात्म्य में श्रीमद्भागवत में स्थान-स्थान पर स्पष्ट शब्दों में बलपूर्वक प्रशंसा परक नहीं, अर्थवाद नहीं, सिद्धान्त रूप में यह कहा गया है, कि भगवान् के चरणों में भक्ति हो जाय, भगवान् के नामों में अनु-राग हो, तो वह वेदवादी ब्राह्मणों से भी अधिक श्रेष्ठ हैं।[३] इससे बढ़कर उदारता और क्या हो सकती है। भगवान् के नाम उच्चा-रण करने और श्रवण करने से चांडाल भी तत्काल पवित्र हो जाता है। जिस म्लेच्छ के हृदय में भगवान् की भक्ति हो जाय वही पूज्य है, पंडित है, द्विजश्रेष्ठ है।[४] कहने का भाव इतना ही

---

१. ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाचार्यहऽघवान्।
श्वादः पुल्कशको वापि शुध्येरन्यस्यकीर्तनात्॥
(श्री० भा०)

२. यथा कांचनतां याति कांस्यं रस विधानतः।
तथा दीक्षाविधानेन द्विजत्वं जायते नृणाम॥
(तत्वसागरे)

३. न मे भक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्वपचः प्रियः।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम्॥
(श्री भाग०)

यन्नामध्ययश्रवणानुकीर्तनाद्
(श्री भाग०)

४. भक्तिरष्ठविधा ह्येषा यस्मिन म्लेच्छेऽपि वर्तते।
सविप्रेन्द्रो मुनि श्रेष्ठ स ज्ञानी स च पण्डितः॥
(गरुड़पुराण)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

है कि वैष्णव धर्म ने भगवन्नाम को शुद्धि का ऐसा अमोघ अस्त्र बताया है कि उससे तो सबकी ही शुद्धि हो जाती है। फिर हमारे यहाँ तो पापों को धोने वाली गङ्गाजी हैं ही। समाज अपनी नीति को सामयिक कर दे। देश काल के अनुसार वह अन्य धर्माव-लम्बियों को अपने में आने की छूट दे दे, एक बार हिन्दु धम में आने पर तो उनका अनुराग स्वतः हो जायगा।

शुद्धि कैसे की जाय

जो विधर्मी हिन्दु धर्म में आना चाहें उनके लिये कोई सरल प्रायश्चित्त-पद्धति स्थिर की जाय। कृच्छ, चान्द्रायण, संतपन आदि बड़े-बड़े व्रत प्रायश्चित्त देश काल की स्थिति के अनुसार असम्भव हैं। इस समय तो देश विप्लव का समय है, हिन्दु जाति एक घोर संकट में फँसी हुई है। इस पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं। अपने ही लोग पराये हो गये हैं। अपने ही चुने हुए बन्धु धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं। बाहर भीतर सभी ओर से हिन्दुत्व को मिटाने के प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। म्लेच्छों के साथ स्वच्छन्द होकर अपने को आर्य धर्मावलम्बी कहलाने वाले रोटी-बेटी का व्यवहार कर रहें हैं और ऐसा करने में परम गौरव का अनुभव करते हैं। इस घोर समय में तो हमें साधारण प्रायश्चित्त करके उन्हें अपने में मिला लेना चहिये। पीछे वे स्वयं ही सब करेंगे। इस आपद्धर्म का आचरण करना चाहिये। फिर जिस जाति में सर्व पापों को प्रशमन करने वाली विष्णु पादाब्जसम्भूता श्री गङ्गाजी हैं, जिनके जल से ब्रह्मशाप से दग्ध हुए, सगर के साठ हजार पुत्रों की सहस्रों वर्षों के पश्चात् हड्डियाँ छू गई थीं, उसी से उनकी सद्गति हो गई, तब कौन से ऐसे पाप हैं, जो मानसिक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पश्चात्ताप के साथ गङ्गा स्नान करने से न छूट सकते हों इसके साथ हरि भगवान् के नामों के स्मरण मात्र से सभी पापों का नाश हो जाता है।❀ अतः उस भगवान के नाम का अखण्ड कीर्तन कराके तथा और भी विद्वान जो सरल सुगम सर्वोपयोगी देश काल के अनुसार प्रायश्चित्त निश्चय करें, इसे करके तुरन्त हमें अपने से बिछुड़े बन्धुओं की शुद्धि कर लेनी चाहिये उन्हें अपने में मिला लेना चाहिये।

❀ आपत्काले तु सम्प्राप्ते शौचाचारं न चिन्तयेत् ।
शुद्धि समुद्धरेत् पश्चात् स्वस्थो धर्मं समाचरेत् ॥
(परा० स्मृ० ७।४३)

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भक्त्याऽपि च तथा कृतम् ।
गंगास्नानं सर्वविधं सर्वपापप्रणाशनम् ॥
चन्द्रायणसहस्रैस्तु यश्चरेत् कायशोधनम् ।
पिवेद्यश्चापि गङ्गाम्भ समौ स्यातां न वा समौ ॥
भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्यदर्शनात् ।
गंगायाः दर्शनात्तद्वत् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ।
देवाभ्यर्चनं पुंसामशेषाऽघविनाशनम् ॥
स्नानमात्रेण गंगायाः पापं ब्रह्मवधोद्भवम् ।
दुराधर्षं कथं याति चिन्तयेद्यो विपेदपि ॥
तस्याहं प्रवदः पापं ब्रह्म कोटिवधोद्भवम् ।
स्तुतिवादमिमं मत्वा कुम्भीपाके पुजायते ॥
आकल्पं नरकं भुक्त्वातो जायेत् गर्दभः ।

❀ प्रायश्चित्तानि यः कुर्यान्नारायण परायणः तस्य पापनिनश्यन्ति अन्यथा पतितोभवेत् ।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अन्तिम निवेदन

मैं आधुनिक राष्ट्रीय विचारों के पुरुषों की भाँति न तो भ्रष्टाचार का समर्थक हूँ, न यही चाहता हूँ कि सबमें बिना विचार के रोटी-बेटी का ही सम्बन्ध हो। जहाँ तक मैंने स्मृति शास्त्रों को देखा है, १०-२० वर्ष तक हुए विधर्मियों के शुद्ध होने का तो विधान है, उनसे प्रायश्चित्त की विधि है। किन्तु जो अनेकों पीढ़ियों से विधर्मी हैं उनके लिये समाज के विद्वानों को मिलकर एक शुद्धि की व्यवस्था देनी होगी। समाज उन्हें अपने में स्वीकार कर ले और ब्राह्मण उस स्वीकृति का अनुमोदन कर दें, तो महापातकी भी शुद्ध बन जाते हैं। ऐसा अत्रिस्मृति का वचन है* शास्त्रों में जिन पापों का प्रायश्चित्त सांगोपांग वर्णन न किया गया हो, तो उनकी शक्ति और पाप को देखकर प्रायश्चित्त निर्णय करना चाहिये। विद्वानों को देश, काल, अवस्था, शक्ति तथा पाप को देखकर प्रायश्चित्त की कल्पना करनी चाहिये। समय की गति को देखकर विद्वानों को निर्णय करना चाहिये कि हम किस प्रकार हिन्दु जाति की रक्षा कर सकते हैं। जिन्हें आप तनिक से अपराध पर या विवशता पर ठुकरा देते हैं, वे समाज के कितने प्रबल शत्रु बन जाते हैं। कहावत है "घर का भेदी ही लङ्का को ढाता है।" हिन्दु समाज से अधिक शत्रु वे ही बनते हैं, जिनका समाज वालों ने तिरस्कार किया है। वे अपनी पुरानी जाति वालों को अपमानित करने, उन्हें हानि पहुँचाने को

---

* अङ्गीकारेण ज्ञातीनां ब्राह्मणानुग्रहेण च ।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा महापातकिनोऽपिये ।।
(अत्रि० स्मृ० २७४)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भाँति-भाँति के जघन्य कार्य करते हैं, पापाचरण करते है, उनके पाप का अधिकांश कुछ भाग समाज को ही लगता है❀ इसलिये अब हमें डंके की चोट घोषणा कर देनी चाहिये। हिन्दु धर्म का द्वार सबके लिये उन्मुक्त है। किसी भी जाति, किसी भी देश, किसी भी धर्म का व्यक्ति क्यों न हो, श्रीमद्भागवत में कहे हुए सत्य, दया, तप, शौच, तितिक्षा, युक्तायुक्त विचार, शम, दम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, सरलता, सन्तोष, समदर्शी सन्तों की सेवा, सांसारिक भोगों से शनैः शनैः निवृत्ति, प्रारब्ध, चिन्तन, मौन, आत्मचिन्तन, प्राणियों में अन्नजलादि का विभाग करके भोजन करना, प्राणिमात्र में, विशेषकर मनुष्यों में, ईश्वर बुद्धि रखना, हरिकथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, सेवा, पूजा, नमस्कार, भगवान् में दासभाव, सख्यभाव और आत्मसमर्पण करना इन ३० लक्षण वाले धर्म का सभी आचरण कर सकते हैं।×

मैं किसी नये धर्म या नये सम्प्रदाय की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, न मेरा इसी बात पर विश्वास है कि संस्कृत की पुरानी पोथी बहुत पुरानी हो गयी है, अब उनके द्वारा हमें अपने धर्म का

❀ अनुक्तनिष्कृतीनान्तु पापानामनुपत्तये।
शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत्।
(मनु० स्मृ० ११, २०९)

देशं कालं वयः शक्तिं पापं चावेक्ष्य यत्नतः।
प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यं स्यादत्र चोक्तनि निष्कृतिः॥
(याज्ञ० स्मृ० ३, २९४)

× सत्यं दया तपः शौचं तितिक्षेक्षा शमो दमः।
अहिंसा ब्रह्मचर्यं च त्यागः स्वाध्याय आर्जवम्॥
सन्तोषः समदृक् सेवा ग्राम्येहोपरमः शनैः।
नृणां विपर्ययेहेक्षा मौनमात्मविमर्शनम्॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

निर्णय न करना चाहिये। मेरा तो विश्वास है कि इन्हीं प्राचीन ग्रन्थों में सम्पूर्ण संसार का कल्याण निहित है। मैं आर्य धर्म और शास्त्रों का समर्थक हूँ। मेरी वर्णाश्रम धर्म पर, वेद शास्त्रों पर प्राचीन आचार-विचार तथा सदाचार पर पूर्ण श्रद्धा है। न मैं यह ही मानने को तैयार हूँ कि हमारे शास्त्रों में छूआछूत कहीं है ही नहीं; किन्तु मेरे कहने का अभिप्राय इतना ही है कि हमें समय के अनुसार आपद्धर्म समझकर शास्त्र की मर्यादा में रहकर अपने सामाजिक व्यवहारों में कुछ परिवर्तन अवश्य करना पड़ेगा। इसके बिना हिन्दु समाज का निस्तार नहीं। हमें किसी को बलपूर्वक हिन्दु नहीं बनाना है। बलपूर्वक कोई धर्म-परिवर्तन से लाभ नहीं। मुसलमानों ने बलपूर्वक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, उन्हें नाना प्रलोभन देकर अपने में मिलाया, किन्तु सैकड़ों हजारों वर्षों में भी क्या वे हिन्दु संस्कृति को भूल गये। वे अब भी हिन्दु बनने को लालायित हैं। यदि हिन्दु उन्हें अपने समाज में मिलाने को उद्यत हों, तो वे अपने समूह के साथ आने को फिर तैयार हैं। ऐसे लोगों को हमें प्रेम से अपनाने में आनाकानी न करनी चाहिये। रही खान-पान, आचार-व्यवहार की बात, सो मैं देखता हूँ, हिन्दु मुसलमानों के आचार विचार में अब कोई विशेष अन्तर रहा नहीं। पञ्जाब के हिन्दु और

अन्नाद्यादेः संविभागो भूतेभ्यश्च यथार्हतः।
तेष्वात्मदेवताबुद्धिः सुतरां नृषु पाण्डव॥
श्रवणं कीर्तनं चास्य स्मरणं महतां गतेः।
सेवेज्यावनतिर्दास्यं सख्यमात्मसमर्पणम्॥
नृणामयं परो धर्मः सर्वेषां समुदाहृतः।
त्रिंशल्लक्षणवान् राजन् सर्वात्मा येन तुष्यति॥
(श्री०भा० ७ स्क० ११ अ० ८ से १२ श्लो०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Fund

मुसलमानों में कुछ बातों में भिन्नता है, नहीं तो पहिनाव उढ़ाव खान पान आचार व्यवहार प्रायः एक से ही हैं। हिन्दु होकर वे अपने को सुधार सकते हैं।

आज सबसे बड़ा धर्म यही है कि विधर्मियों को स्वधर्म में लाना। पिछड़े हुओं को अपने में मिलाना, गौभक्षकों को गौरक्षक बनाना। विदेशी संस्कृति को अपनी संस्कृति मानने वालों को भारतीय संस्कृति सिखाना, उन्हें रामकृष्ण का भक्त बनाना। भगवन्नाम संकीर्तन का महत्व बताना। मेरा तो दृढ़ सिद्धान्त है और इसी सिद्धान्त के प्रचार के लिये मैं जी रहा हूँ, इसी के लिये जितना मुझसे हो सकता है प्रयत्न कर रहा हूँ। भगवान् नाम संकीर्तन का प्रचार होने से ये सभी वाद विवाद समाप्त हो जायँगे। भगवान् के नाम कीर्तन में ब्राह्मण, चाण्डाल सभी वर्ण सभी आश्रम सभी देश सभी धर्म के लोग समान भाव से सम्मिलित हो सकते हैं। भगवन् नाम संकीर्तन का प्रचार हो, भगवान के नामोच्चारण का माहात्म्य सबको समझाया जाय, तो हमें शुद्धि करने जाना न पड़ेगा। सभी स्वतः ही शुद्ध हिन्दु बन जायँगे। अतः सर्वत्र बड़े उत्साह से भगवन्नाम कीर्तन का प्रचार होना चाहिये। उसमें सबको सम्मिलित करें, लोगों को भगवन्नाम का अमृत पिलावें, भगवान् का चरणामृत पिलाकर उन्हें हिन्दु बना लें। अन्त में जिनके नाम संकीर्तन से महापातकी भी विशुद्ध बन जाते हैं, उन प्रभु के पादपद्मों में प्रणाम करके इस क्षुद्र लेख को समाप्त करता हूँ और विद्वन्मंडली के चरणों में प्रार्थना करता हूँ, वह मेरी इस प्रार्थना पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी।

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

छप्पय

सब जन होवें हिन्दु त्यागि देवें सब पातक।
गो रक्षा सब करें रहे जो अब तक घातक॥
राम कृष्ण गुन गाइ पर्व त्यौहार मनावें।
तीरथ व्रत मिलि करें भक्ति तैं गङ्ग नहावें॥
समय समय पै तजे जे, तिनिकूँ अब अपनाइँगे।
मिलि प्रभु गुन सब गाइँगे, हँसिके हिये लगाइँगे॥

हे हरि! ऐसो करो हिन्दु अब तो जगि जावें।
जे घरमहँ रिपु बने बन्धु अब तिनहिँ बनावें॥
भारतीय सब होहिँ मातु पितु भारत जानें।
गीता अरु गोविन्द, गाय, गंगा कूँ मानें॥
भूत विदेशी देश तैं, भगवन् तुरत भगाइ दें।
अघहारी अघ दूर करि, तिनहिँ विशुद्ध बनाइ दें॥

120350

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Fu

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीहरि: ॥

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित पुस्तकें

१–भागवती कथा (१२५ खण्डों में)—११५ खण्ड छप चुके हैं। प्रति खण्ड का मू० ३.०० डाकव्यय पृथक्।

२–श्री भागवत चरित—लगभग ९०० पृष्ठ की, सजिल्द मू० ११.००

३–सटीक भागवत चरित (दो खण्डों में)—एक खण्ड का मू० २१.००

४–बदरीनाथ दर्शन—बदरी यात्रा पर खोजपूर्ण महाग्रन्थ मू० ६.००

५–महात्मा कर्ण—शिक्षाप्रद रोचक जीवन, पृ० सं० ३५० मू० ५.००

६–मतवाली मीरा—भक्ति का सजीव साकार स्वरूप

७–भक्तचरितावली प्रथम खण्ड मू० ४.५० द्वितीय खण्ड

८–मुक्तिनाथ दर्शन—मुक्तिनाथ यात्रा का सरस वर्णन

९–गोपालन शिक्षा—गौओं का पालन कैसे करें

१०–श्री चैतन्य चरितावली (पाँच खण्डों में)—प्रथम खण्ड का

११–नाम संकीर्तन महिमा—पृष्ठ संख्या १००

१२–श्री शुक—श्री शुकदेवजी के जीवन की झाँकी (नाटक)

१३–भागवती कथा की बानगी—पृष्ठ संख्या १००

१४–शोक शान्ति—शोक की शान्ति करने वाला रोचक पत्र

१५–मेरे महामना मालवीयजी—उनके सुखद संस्मरण,

१६–भारतीय संस्कृति और शुद्धि (शास्त्रीय विवेचन) मू० ०.५०

१७–भागवत चरित की बानगी–पृष्ठ संख्या १०० मू० ०.७५

१८–गोविन्द दामोदर शरणागत स्तोत्र—(छप्पय छन्दों में) मू० १.००

१९–सत्यनारायण की कथा—छप्पय छन्दों सहित मू० १.००

२०–भागवत चरित संगीत सुधा १.००

२१–कृष्ण चरित— मू० ३.००

२२–प्रयाग माहात्म्य— मू० ०.५०

२३–वृन्दावन माहात्म्य— मू० ०.२५

२४–सार्थ छप्पय गीता— मू० ४.००

२५–राघवेन्दु चरित सटीक मू० २.००

२६–राघवेन्दु चरित— मू० ०.५०

२७–प्रभुपूजा पद्धति— मू० ०.५०

२८–श्री हनुमत्-शतक— मू० १.००

२९–महावीर-हनुमान— मू० २.५०

३०–छप्पय विष्णु सहस्रनाम मू० १.५०

३१–निःश्वास– मू० ०.५०

३२–गुरु–भक्ति और एकलव्य मू० १.००

३३–भरत-यात्रा तीर्थ माहात्म्य मू. .५०

पता—संकीर्तन भवन झूसी (प्रयाग)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu